
R
530.04
SHA-H

क्रा।

हारिधारित ग्रन्थ रत्नम्।

श्रीहरिराय शर्म्म विरचितम्

...कश्मीर राज्यान्तरगत ऊधमपुर वास्तव्य

वैद्यालङ्कार भिषक् चूडामणि

पं० वासुदेव शर्म्मा वैद्य विद्यावाचस्पति

कृत भाषा टीका सहितम्।

चिकि० पं० विश्वेश्वरदयालुजी वैद्यराज

श्रीहरिहर औषधालय बराल...

इटावा यू० पी०

द्वितीयावृत्ति १००० } सन् १९२६ { मूल्य ।≠) प्रति पुस्तक

पण्डित सरयूदयाल दीक्षित के प्रबन्ध से

मित्र प्रेस, इटावा में मुद्रित।



भूमिका ।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ॥

इसी आशय से हमारे पूर्वज भारत रत्न महर्षिगण श्रीचरक सुश्रुतादि अपने २ नामों से अनेक विधि आयुर्वेदिक तंत्र लोकोपकारार्थ धर्मार्थ काम मोक्ष साधक शरीर के स्वास्थ्य लाभार्थ रच कर महोपकार कर गये जिनके उपदेश श्रवण मात्र से तथा उसका मनन करने से ही हम अनेक प्रकार के दुष्ट रोगों के अनेक विधि कष्टों से मुक्त होकर आनन्दमय जीवन का परमानन्द सुख भोग उठा सकते हैं ।

किन्तु आज हमें वह सुखभोग, विषय लम्पट आचार विचार हीन, निज आहार विहारहीन देखकर सात समुद्र पार भाग गया जिसके पुनः आह्वान के लिये धुरन्धर विद्वान आज भी अनेक प्रकार के वैद्यक सम्बन्धी नाना प्रकार के पुस्तक, विद्यालय, औषधालयोद्घाटन प्रभृति असम्भव परिश्रम का सम्यक् सम्पादन कर रहे हैं

इसमें दयामय ... अवश्य आवेगा और वह आयुर्वेद की तन्द्रा की औषधि प्रदान कर पुनरुद्धार करेगा ।

अतएव हीन दीन भारत को देख श्रीहरिराय शर्मा ... ऐसी छोटी सी पुस्तिका की रचना की ... वृथा नहीं और ना ही अधिक द्रव्य व परिश्र... अनेक योग पांच चार पैसों ही से सिद्ध हो ... कहने की ज़रूरत नहीं ग्रंथकर्त्ता महोदय ने गागर में सागर भर दिया है, इसकी एक प्रति पुरातन लिपि मुझे मेरे मातुल पूज्यपाद पं० वर श्री सन्तराम शर्म्मा जी श्रीवात्स्य दैवज्ञवर महोदयजी से प्राप्त हुई ।



इसके अमोघ फलप्रद यागों का अनुभव कर इसकी भाषा टीका की रचना से मैं भी वैद्य महोदयों की सेवा के लिये उत्सुक हुआ।

इसमें प्रमादवश रही त्रुटियों के लिये विद्वानोंसे क्षमा प्रार्थी हूं, इसके प्रचार व प्रकाश करने के लिये श्रीयुत मान्यवर वैद्यराज पं० विश्वेश्वरदयालुजी का मैं अतीव कृतज्ञ हूं जिन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर अपने व्ययसे छपवा कर विशेष धन्यवादके भाजन हुए।

योगमाला के ५ नं० के नियमानुसार वैद्यराज महोदयजी की सेवा में समर्पित कर प० जी का हृदय से धन्यवाद करता हूं और अन्तमें परमात्मा से विनीति प्रार्थना है कि ऐसे परोपकारी नर रत्न दीर्घजीवी हो देश व विद्योन्नतिमें पूर्ण साफल्य साधन करें।

चन्द्र वसुमिते वर्षे ग्रह चन्द्र समन्विते।
ज्येष्ठमासेऽसिते पक्षे ग्रंथश्च पूर्णतां गतः॥

॥ ओ३म् शमिति ॥

वैद्यवरों का कृपाकांक्षी—

विनीत,

वासुदेव शर्मा,

ऊधमपुर जम्बू

———

हरिधारित ग्रन्थस्य विषानुक्रमणिका ।

॥ ओ३म् ॥

॥ श्रीगणेशायनमः, श्रीधन्वन्तरयेनमः ॥



हरिधारित ग्रन्थ रत्नम्.

ग्रन्थ कृन्मङ्गलम् ।

वन्दे वन्दारुदेवा सुर नर वरदं विघ्नवल्ली कुठारम्,
संसारागार भारोद्धरण पटुतरं स्तम्भ मम्भोदनादम्, ।
उद्यच्चण्डा शुताम्रा चलशिखर सदृक् कुम्भमम्भोजहस्तम्,
भ्राम्यन्मत्तालिमालंत्रिभुवनविपदां वारणं वारणास्यम् ॥ १ ॥
गुरु वागीश्वरीञ्चैव नत्वा धन्वन्तरिं मुनीन्
संक्षिप्यहरिशर्म्माहंरचयामिचिकित्सितम् ॥ २ ॥

टीकाकृन्मङ्गलम् ।

प्रणम्यसच्चिदानन्दं पार्वती सहितं शिवम् ।
हरिधारितग्रन्थस्य टीकाञ्चरचमाम्यहम् ॥ १ ॥
सुलभ्ययोगाः सर्वेऽस्मिन् रोगिणां सुखहेतवे ।
प्रकाश्यते च वैद्यानां लाभायैवमयाधुना ॥ २ ॥
विधायटीकां विधिवत्सुगुप्तां विश्वेश्वराख्याय दयालुशर्मणे ।
श्रीवासुदेवेनद्विजेनशर्मणा समर्प्यते संप्रति सादरंमया ॥ ३ ॥

—०—०—

तत्रादौज्वर चिकित्सा ।

(अथ सुदर्शन चूर्णम्)

महौषधं कण्टकारी शटीशृङ्गी च पौष्करम् ।
कटुका मधु यष्टी च गडूच्या मलकानि च ॥ १ ॥
शालपर्णी निशाकृष्णा कारवीत्राय माणका ।
पर्पटं धन्वयासश्च पत्रखदिर सारकम् ॥ २ ॥
वंशज बालकं मूर्वात्वङ्मुस्तानि विषाभया ।
दीप्यक ग्रन्थिकंवन्हि माषपर्णी पटोलकम् ॥ ३ ॥
सर्वौषध समोयोज्या भूनिम्बश्चेति चूर्णितम् ।
सुदर्शनाख्यं विख्यातं पीतं तप्ताम्बुना सह ॥ ४ ॥
ज्वर मष्टविधं हन्ति सन्निपातं विशेषतः ।
दाहं मोहं तथा तंद्रा पाण्डुं शूलञ्च कामलम् ॥ ५ ॥
हृद्रोगं श्वास कासादि रोगाणां नाशनं परम् ।

भाषा टीका—शुंठी, कटेरी, कचूर, शृंगी, (काकडासिंगी) पोहकरमूल, कुटकी, मुलहठी, गिलोय, आमला, शालपर्णी, (सरवन) हलदी, पिप्पली, सौंफ, त्रायमाणा (अभावे वनफ्शा) पापड़ा, धमासा, तजपत्र, खदिरसार, (कत्था) बंशरोचन, (तबासीर) सुगन्धबाला, मूर्वा (अभावे विद्यापीठ निश्चित बन· केतकी मूलम् जांगली केवड़ा) दालचीनी, नागरमोथा, अतीस, हरड, अजवाइन, पीपरीमूल, चीतामूल, वनमाष, बनपर्वल, चिरायता यह सम्पूर्ण औषधि सम भाग लेकर बारीक चूर्ण तैयार करे सब औषधि के समान चिरायता मिलावें इसे सुदर्शन चूर्ण कहते हैं सुखोष्ण जलसे यह तीन माशा से ६ मासा मात्रा बलाबल के अनुसार सेवन किया हुआ आठ प्रकार के ज्वरों को शान्त करता है विशेष कर सन्निपातज्वर में विशेष लाभकारी है, दाह, मोह, तन्द्रा, पाण्डु, शूल, कामला हृदयरोग, श्वास (दमा) खांसी, (कास) आदि अनेक रोगों का यथोचित अनुपान से नाश करता है, अनु·

पान वैद्य महोदय अपनी बुद्धि के अनुसार परिवर्त्तन कर सकते हैं, यथा सन्निपात में आद्रक स्वरस दशमूल अष्टादशाङ्गादि कषाय से, कास में कंटकारी कषाय से इत्यादि यह चूर्ण सचमुच सुदर्शन हो है इसकी अन्य ग्रन्थों में भी बहुत प्रशंसा है यहां तक लिखा है कि सुदर्शन की उपमा देने से वास्तविक भगवान् का सुदर्शन चक्र जैसे दुष्ट दानवों के नाश करने में अपनी अमोघ मारक शक्ति दिखाता है वैसा ही प्रभाव यह चूर्ण भी ज्वरमात्र में दिखाता है किन्तु शोक है कि स्वल्प मूल्य व अनायासलभ्य इस रत्न का आदर आजकल वैद्यवरों ने त्याग दिया यह एक योगराज ही ज्वर के सहानुजायी उपद्रवों को भी दमन कर देता है दूसरे उपचार की आवश्यकता नहीं रहती एक २ बार इसकी परीक्षा तो कर देखें कि कुलीनका बाबा यह है कि नहीं। केवल उष्णोदक पर ही या चूर्ण ही खिलाने से महात्म्य नहीं है जैसे रोगी को सुखकर हो जैसे सुगमता से खासकें वैसा अपनी बुद्धि के अनुसार उपयोग कर लेना चाहिये अगर इसी चूर्ण के अष्टावशेषित कषाय की चूर्ण को ४-५ भावना दे लो तो विशेष गुण दिखायगा, एक तो यह काष्ठक औषधि होने से न्यूनाधिक सेवन में हानि नहीं दूसरा सुलभ्य अनायास सिद्ध कम खर्च बालानशीन की कहावत चरितार्थ करता है। किन्तु यह लघु सुदर्शन चूर्ण है वृहत् अन्य भावप्रकाशादि ग्रन्थों में विद्यमान है उसको लगभग ५५ वनौषधियां हैं, उस ही का प्रयोग वैद्य महोदय कर देखें।

यतः, अधिकस्याधिकं फलम्—इसकी प्रशंसा में इस प्रकार लिखा अत्युक्त नहीं है।

सुदर्शनं यथा चक्रं दानवानां विनाशनम्।
तथा ज्वराणां सर्वेषां चूर्णमेतत्प्रनाशनम्॥

जब इसका प्रयोग वैद्यवर गण स्वयं अनुभव करेंगे तो इसका तारतम्य भी प्रतीत होगा मैंने इस पुस्तिका में निर्दिष्ट प्रयोगों का

अनेकबार अनुभव कर देखा है और प्रत्यक्ष फलप्रद पाया, एतदर्थ इसे प्रकट करना अवश्य समझा और भी इसके प्रयोगों का अनुभव कर देखलें ।

॥ इति सुदर्शन चूर्णम् ॥

अथ ज्वरांकुशोरसः ।

त्रिकटुं ह्यष्ट भागञ्च द्वौभागौरसगन्धकौ ।
धत्तूर बीज विषजौ द्वौ द्वौभागौ प्रकीर्तितौ ॥
संमर्द्य चार्द्रकरसे गुञ्जा युग्म वटी कृता ॥
दत्तार्द्रकरसेनैवनिहन्ति सकलाञ्ज्वरान् ॥

त्रिकटु (पीपल मरिच शुंठी) आठ भाग, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक दो २ भाग, धतूरे के बीज और शुद्ध विष दो २ भाग ।

विधि—प्रथम गन्धक का बारीक चूर्ण कर खरल से पारद सहित उक्त गन्धक चूर्ण को चार घंटा तक अच्छी तरह घोटे जब अत्यन्त कृष्ण कज्जल समान होजाय तो खुरच कर अलग करले इसे कज्जली कहते हैं तदनन्तर अन्य औषधियों का बारीक कपड़-छन चूर्ण उक्त प्रस्तुत कज्जली में मिलाकर आद्रक के रस में घोटे दो २ रत्ती की गोली बनाले यह रस आद्रक के रस से सम्पूर्ण ज्वरों का नाश करता है ।

शीतज्वराङ्कुशोरसः ।

तालकं शुक्तिकाभस्म टङ्कं टङ्कं प्रमाणतः ॥ ८ ॥
टङ्कयुग्मंतुत्थकञ्च कौमार्यास्त्रिभिर्भावितम् ।
शरावयुग्ममध्यस्तं पक्वं गजपुटे ततः ॥ ९ ॥
स्वांगशीतं समादाय गुञ्जायुग्मं सितायुतम् ।
भक्षयित्वाथ भुंजीत पथ्यंखण्डोदनं शुभम् ॥ १० ॥
शीतज्वरोऽचिरेणैव विनाशमधि गच्छति ।

हरताल, सीपकी (मुक्ताशुक्ति) भस्म चार २ मासा, तूतिया ८ मासा शुद्ध इनको बारीक पीस घीकुमार के रस की तीन भावना देकर एक प्याला में इसकी टिकियां बनाकर धरे ऊपर दूसरा

प्याला रख सत कपरौटी कर सम्पुट धूप में सुखाकर गजपुट जङ्गली कण्डों से दे जब सर्वाङ्ग शीतल होजाय तो सम्पुट युक्ति से खोलकर औषधि निकाल बारीक पीसकर शीशी में भर रक्खे इस रस की दो रत्ती मात्रा मिश्री के साथ सेवन करने से शीतज्वर का नाश होता है, इस रस के सेवन करने वाले रोगी को पथ्यमें पुराने उत्तम चावलों का भात शर्करा (चीनी) के साथ देना चाहिये तो इससे शीघ्र ही शीतज्वर दूर होता है।

ज्वरघ्नीगुटिका।

उपकुल्याऽरिष्टफलेततः श्वेतशिलासमम् ॥ ११ ॥
कारवल्लीरसे पिष्ट्वा वटीं टङ्क प्रमाणतः।
कृत्वा प्रदापयेद्वैद्यस्त्रिदोष ज्वरनाशिनीम् ॥ १२ ॥

पीपल, निमौली, मनःशिला-यह सम भाग लेकर बारीक चूर्ण कर करेला के रससे खरल कर ४ मासा की गोली बनाले यह वटी त्रिदोष ज्वर का नाश करती है।

"वैद्यवरों के हितार्थ इसी का पाठान्तर लिखता हूं जिसका अनेकबार प्रयोग किया जा चुका है, इसका हरेक ज्वर में प्रयोग किया जाता है" यह इसका मूल पाठ नहीं है, यथा—

प्रक्षिप्त।

श्यामामनःशिलारिष्टफलं सम्यग्विचूर्णयेत्।
कारवेल्लीरसेनैव गुटिकां कारयेद्बुधः ॥ १ ॥
अस्यानेत्राञ्जनात्सर्वे ज्वरा नश्यन्तिदारुणाः।
ज्वरघ्नो गुटिकानाम नेत्र रोगापहारिणी ॥ २ ॥

श्यामा नाम पिप्पली का है यथा (कटुबीजा श्यामा वन्त कफेति) पिप्पली, मनःशिला, निमौली (नीम का फल) सम भाग इसका चूर्ण कर करेला के रस से गोली तैयार करे पानी से घिस कर इसे नेत्रों में आंजने से ज्वरमात्र की शान्ति होती है, ज्वर के

वेग से प्रथम दो तीन बार इसका अञ्जन पानी या गुलाब के अर्क से करना चाहिये विशेष लाभ होता है, खाने की औषधि भी खिलानी इसका प्रयोग भी करना चाहिये (एकन्तरा ज्वर, चातुर्थिक ज्वर में भी इसका विशेष फल देखा गया, पर वैद्योंवरों ने इसे आज तक गुप्त ही रक्खा था मुझे यह प्रयोग श्री १०८ श्रीयुक्त पूज्यपाद पण्डित-व प्रगण्य श्रीवत्स्य कुलावतंस स्वर्गभूषण वैद्यराज पं० श्रीनन्द-लाल शर्मा महोदयजी ऊधमपुर–जम्मू, कश्मीर स्टेट से प्राप्त हुआ था वह मेरे मातुल थे प्रेम से मुझे चिकित्सा शास्त्र की शिक्षा दी थी अनेक वर्षों के अनुभव से सिद्ध उनके अमोघ गुणकारी प्रयोग फिर कभी वैद्यवरों की सेवा में प्रकाशित करने की आशा है ।

पित्त दाहज्वरे चूर्णम् ।

ह्रवेरं वंशजं मुस्तं शुंठी चन्दन पर्पटम् ।
उशीर चेति तोरेण चूर्णं पित्त ज्वरं हरेत् ॥ १३ ॥

नेत्रवाला, तबाशीर, नागरमोथा, शुंठी, सफेद चन्दन, पापडा, खस, सम भाग ले इनका बारीक चूर्ण कर शीतल जलसे सेवन करे दाहयुक्त पित्तज्वर को शान्त करता है ।

कफज्वरे नस्यम् ।

कटफलश्च त्रिकटुकं पिष्ट्वा नीरेण भावितम् ।
कफोत्थितंज्वरं हन्ति क्षणेनैव न संशयः ॥ १४ ॥

कायफल वृक्ष की छाल, पिप्पली, मरिच, शुंठी, जल से पीस कर कफोत्थित ज्वराक्रान्त रोगी को सुंघाने से कफजज्वर शान्त निश्चय से होता है ।

वातज्वरे चूर्णम् ।

त्रिकटून्यभयाचाथ सौवर्चल किरातकम् ।
चूर्णमेतज् ज्वरंवातसंजातं हन्तिभक्षणात् ॥ १५ ॥

पिप्पली, मरिच, शुंठी, हरड, सौंचर नमक, चिरायता, इनका

सम भाग बारीक चूर्ण करे इसके सेवन से वातज्वर शान्त होता है ॥ १५ ॥

अथ रसज्वरे चूर्णम् ।

अजमोदाभयाचाथ सौवर्चल समन्वितम् ।
तत्तोष्णेन संपीतं रसशेषज्वरापहम् ॥ १६ ॥

अजवाइन, हरीतकी, सौंचर नमक समान भाग इनका चूर्णकर सुखोष्ण जल से सेवन किया रस ज्वर का नाश करता है ॥ १६ ॥

अथ कफ वात पित्त ज्वराणां चूर्णम् ।

भूनिम्ब विश्वौषधमुस्तपर्पटं कृष्णा गुडूची कटुका समांशतः ।
चूर्णं जलेनेति पिबन्नरो यस्तस्याशु नश्यन्ति त्रिदोषजा ज्वराः ॥ १७ ॥

चिरायता, शुंठी, नागरमोथा, पित्तपापडा, पीपल, गिलोय, कुटकी सम भाग इनको लेकर बारीक चूर्ण करे (यदि चिरायता के चूर्ण की ही भावना दी जायें तो विशेष लाभ होगा) यह जल से सेवन किया शीघ्र ही वात, पित्त, कफजनित ज्वरों को दूर करता है ॥ १७ ॥

शीतज्वरे चूर्णम् ।

छिन्नोद्भवोपकुल्या च शुण्ठी गोपो समांशतः ।
जलेन टंकद्वितयं पीतं शीतज्वरापहम् ॥ १८ ॥

गिलोय, पिपली, सोंठ, सनाय की पत्ती (अथवा काली वेल) इनका बारीक चूर्ण कर ८ मासा की मात्रा जल से सेवन किया शीतज्वर का नाश करता है ।

अथ सन्निपात चिकित्सा ।

(आनन्द भैरवोरसः)

हिङ्गुलं टंकणं चैव विषं मरिचपिप्पली ।
श्रृङ्गवेर रसेनैषावटी गुंजा प्रमाणतः ॥ १९ ॥
आनन्दभैरवरसः सन्निपात ज्वरं कफम् ।
शीताङ्गानिलसंमोहं शूलानि प्रसभंजयेत् ॥ २० ॥

सिंगरफ शुद्ध शुद्ध सुहागा, शुद्ध विष, मरिच, पिप्पली इनको सम भाग ले प्रथम हिंगुल प्रभृतियों का बारीक चूर्ण पृथक् २ करे विष और सुहागा इकट्ठा अच्छी तरह घोंटे बाद पिप्पली मिलाकर घोंटे बाद अन्य औषधियें मिलाकर आद्रक के रस से खरल कर एक एक रत्ती की गोली करे इसे आनन्दभैरवरस कहते हैं ।

यह सन्निपातज्वर, कफ, शीताङ्ग, वायु, मोह, शूलादि रोगों का हठ से विनाश करता है ॥ २० ॥

अथ चिन्तामणि रसः ।

पारदं गन्धकं त्रीणिकटूनि पटु* पञ्चकम् ।
×क्षारत्रयं जीरके द्वे गगनं विष मित्यतः ॥ २१ ॥

संपेष्यार्द्रकताम्बूलरसाभ्यां पञ्चरक्तिका ।
वटी चिन्तामणिर्नामरसो हन्ति त्रिदोषजम् ॥ २२ ॥

ज्वरन्तथा च विषममामवातं कफन्तथा ।
अर्शांसिनाशयत्याशु शूलाध्मानोदराणि च ॥ २३ ॥

हिंगलोत्थपारद, शुद्ध गन्धक, पिप्पली, मरिच, शुंठी, पांचो लवण, यवक्षार, सज्जीखार, शुद्ध सुहागा; काला और सफेद जीरा, कृष्णाभ्रक भस्म, शुद्ध विष यह १७ औषधि बारीक पृथक् २ पीस लो पारद गन्धक की कज्जली कर पुनः अन्य औषधि मिलाकर आद्रक रस और पान के रस में एक २ दिन घोंटकर पांच रत्ती की गोली करे यह चिन्तामणि रस सन्निपातज्वर, विषमज्वर, आमवात, कफ, बवासीर, शूल, आध्मान, उदर रोगों का शीघ्र नाश करता है ॥ २३ ॥

---

* सिन्धु सौवर्चलं चैव विडं सामुद्रकं गडं ।
एक द्वि त्रि चतुः पञ्च लवणानि क्रमाद्विदुः ॥ १ ॥

×सर्जिका यावशूकञ्च क्षार द्वय मुदाहृतम् ।
टंकणेन युतन्तच्च क्षारत्रय मुदीरितम् ॥ २ ॥

कनकसुन्दरी रसः ।

× त्र्यूषणं गन्धकं सूतं विषं टङ्क मितंपृथक् ।
कनकस्यजटाटङ्कत्रयं चैकत्र मर्दयेत् ॥ २४ ॥
त्रिदिनं मार्कवरसे गुटिका गुञ्ज मानतः ।
सन्निपातञ्च शीतागं कफं शीतज्वरारुची ॥ २५ ॥
उन्मादञ्चभ्रमं हन्ति रसः कनकसुन्दरः ।

पिप्पली, मरिच, सुंठी, गन्धक, पारा, शुद्ध विषप्रत्येक चार २ मासा और धतूरा की जटा (मूल) १२ मासा, प्रथम पारा, गन्धक की कज्जली करलो बाद अन्य औषधि मिलाकर भांगरा के रस में तीन दिन मर्दन कर एक रत्ती की गोली करे यह रस सन्निपात, शीतांग, कफ, शीतज्वर, अरुचि, उन्माद, भ्रमादिकों का नाश करता है ॥ २५ ॥

सन्निपातेक्वाथः ।

किरातं ग्रन्थिकंशुण्ठी त्वेषां क्वाथः प्रदापयेत् ।
सन्निपातज्वरोघोरः शान्तिमेति न संशयः ॥ २६ ॥

चिरायता, पिप्पलीमूल, सुंठी, कषाय विधि से अष्टमांश साधित इनका क्वाथ देने से घोर सन्निपात ज्वर नष्ट होता है ॥२६॥

चूर्णम् ।

किराता कर्कटंदेवकुसुमं कुंकुमं कणा ।
शृङ्गवेर रसेनैषां चूर्णं शाणमितं पिवेत् ॥ २७ ॥
सन्निपात कफोन्मादी ÷ तन्द्रा मारुत शीतताम् ।
कासं शूलं भ्रमं मोहं ज्वरं चापि विनाशयेत् ॥ २८ ॥

× पिप्पली मरिचं शुंठी त्रिभिस्त्रियूषण मुच्यते ।
÷ हृदये व्याकुलीभावं वलेदोवादेह गौरवम् ।
मनोबुद्ध्यप्रसादश्च तन्द्राया लक्षणं विदुः ॥

चिरायता, शक्कर्करा, लौंग, केसर, पिप्पली समान भाग लेकर, इनका चूर्ण कर ४ मासा मात्रा परिमाण से आद्रकके रस से सेवन किया सन्निपात, कफ उन्माद, तन्द्रा, वायु, शीतांग, कास, शूल भ्रम, मोह का नाश करता है ॥ २८ ॥

—०—०—

अथातीसार चिकित्सा ।

मरिचन्दाडिमफली मस्तकी वंशरोचनम् ॥ २९ ॥
चूतास्थि मज्जालोध्रश्च महाराष्ट्री च मालिका ।
माजूफलं मोचरसस्तथा खदिर सारकम् ॥ ३० ॥
कूष्माण्डबीजमज्जा च तथा जातीफलं शुभम् ।
बब्बूलपुष्पं चैतानि ह्यहिमूलाम्बुनासह ॥ ३१ ॥
खञ्येष्यशाणप्रमितावटी तण्डुल वारिणा ।
पीतानिहन्त्यतीसारं पथ्यं संमथितोदनम् ॥ ३२ ॥

मरिच, अनार के फूल, रूमामस्तंगी, तबासीर, आमकी गुठली की गिरी, लोध, शुद्ध फिटकरी, मांई, माजूफल, मोचरस, कत्था, पेठा के मगज, जायफल, बबूलके फूल यह सम भाग लेकर बारीक चूर्णकर पोस्त के जल में खरल कर चार मासा की गोली करे यह गोली चावलों के धोवन से सेवन की अतीसार का नाश करती है, इसमें पथ्य मथित गाय के दही से भात देना चाहिये, रोगी की हालत देखकर ॥ ३२ ॥

अथ महागङ्गाधरचूर्णम् ।

मुस्तारलु प्रतिविषाधातकी विश्व भेषजम् ।
×लज्जालु र्लोध्र चूतास्थिमज्जा मोचरसस्तथा ॥ ३३ ॥

×लज्जालु र्हिंशमीपत्रा समङ्गाजलकारिका ।
रक्तपादि नमस्कारी नाम्नाखदिर वेत्यपि ॥ निघण्टौ गुणाश्च ॥
लज्जालुः शीतलातिक्ता कषाया कफ पित्तजित् ।
रक्तपित्तमतीसारं योनि रोगांश्च नाशयेत् ॥

कौटजं खादिरःसारो वंशरोचन बालकम्।
मधुकश्चेति संचूर्ण्य पिबेत्तण्डुल वारिणा ॥ ३४ ॥
अतीसार विनाशः स्यात्पथ्यं समथितोदनम्।

नागरमोथा, अरलु (टाटर) अतील, धवई के फूल, शुण्ठी, लज्जावन्ती (छुईमुई) लोध, आम की गुठली, मोचरस, इन्द्रयव, कत्था, तवाखीर, नेत्रबाला, मुलहठी इनका चूर्ण चावलों के धोवन से सेवन किया अतीसारका नाश करता है। पथ्य—इसमें भी गाय के दही का पनीर बनाकर तोड़ निकाल दे बाद अन्य जल मिलाकर घोल करे इसमें काली मिरच, सेंधा नमक, जीरा, शुण्ठी मिलाकर तैयार करे, इसके संग भात खिलाना चाहिये ॥ ३४ ॥

लघु गङ्गाधर चूर्णम्।

विश्वौषधं मोचरस मजमोदां च धातकीम् ॥ ३५ ॥
संचूर्ण्यतक्र सपीतमतीसारं विनाशयेत्।

शुण्ठी, मोचरस, अजमोदा (वल अजवायन) धवई के फूल सम भाग लेकर इनका चूर्ण करे यह तक्र (मठा) से सेवन किया, अतीसार का नाश करता है ॥ ३५ ॥

अथ ज्वरातीसारे क्वाथः।

शुंठी गुडूची मुस्तातिविषाखादिर सारकम् ॥ ३६ ॥
॥ इति पञ्चौषधिः क्वाथो ज्वरातीसार नाशनः ॥

तथाच—

नागरातिविषा मुस्ता भूनिम्बामृत वत्सकैः ॥ ३७ ॥
सर्व ज्वरहरः क्वाथः सर्वातीसार नाशनः। इति ग्रन्थान्तरे

शुण्ठी, गिलोय, नागरमोथा, अतीस, कत्था इन पांच औषधियों का क्वाथ ज्वरातीसार नाश करता है ॥ ३६ ॥

ग्रन्थान्तरमे (नागरादिक्काथ) शुंठो, अतीस, नागरमोथा, चिरायता, गिलोय, कूडाकी छाल, ज्वर सहित अतीसार और केवल अतिसार का (सर्वज्वर, सर्वअतिसार का) नाश करता है ॥३७॥

रक्तातीसारे क्काथः ।

वशजं बालकंमुस्ता खादिरः सारएव च ।
विल्वं प्रतिविषाक्काथो ज्वररक्तातिसारजित् ॥ ३८ ॥

तवासीर, नेत्रवाला, नागरमोथा, कत्था, छोटे कच्चे विल्व की गिरी, अतीस, इनका क्काथ ज्वर सहित रक्तातीसार का नाश करता है, तवासीर का चूर्ण पीछे से मिलाना चाहिये ॥ ३८ ॥

अथ ग्रहणी चिकित्सा ।

मुस्ताशुंठी कुण्डलीचातिविषाचोष्णवारिणा ।
चूर्णमामारुचि हरंग्रहणीं वायुशूलजित् ॥ ३९ ॥

नागरमोथा, शुंठी, बालछड़, अतीस, सम भाग लेकर इनका चूर्ण कर सुखोष्ण जल से सेवन किया आम, अरुचि, संग्रहणी, वायुशूल को जीतता है ॥ ३९ ॥

अथ क्वाथः ।

लोध्रं पाठा च लज्जालुर्मुस्तं विल्वं महौषधम् ।
धन्यकातिविषेबालं वराखदिरसारकः ॥ ४० ॥
क्काथएषामामशूलग्रहण्यरुचि नाशकः ।

लोध, पाठा, छुईमुई, नागरमोथा, वेलगिरी शुंठी धनियाँ, अतीस, नेत्रवाला, शतावरी, कत्था, अष्टमांश, चतुर्थांश वा अवशिष्ट इन औषधों का क्वाथ आम, शूल, ग्रहणी, अरुचि का नाश करता है ॥ ४० ॥

श्रीहरिरायशर्म विरचिते हरिधारितग्रन्थे ज्वरसन्निपातातीसार ग्रहणीरोग प्रतीकारोनाम प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

अर्शोरोगाधिकारः ।

मरिचात् द्विगुणःशुंठी चित्रमष्टगुणन्तथा ॥ ४१ ॥
सूरणः षोडशगुणः सर्वेभ्यो द्विगुणोगुडः ।
एषां टंकद्वयवटी दुर्नामानाह गुल्मजित् ॥ ४२ ॥

मरिच १ भाग, शुंठी २ भाग, चीता ८ भाग, सूरणकंद (पंजाब प्रांत में इसे जिमीकंद कहा जाता है) १६ भाग, सब औषधों से द्विगुण पुराना गुड़, प्रथम सब औषधों का बारीक चूर्ण करे, बाद गुड़ मिलाकर इमामदस्ता में धर कर खूब चोटें लगावे, जब औषधि अच्छी तरह मिल जाय तो २ टंक (८ मासा) के मोदक तैयार करे, यह गोली अर्श (बवासीर) आनाह (पेट का फूल जाना) और गोला का नाश करता है ॥ ४२ ॥

अथ चूर्णम् ।

स्योनाकश्चित्रकः शुंठी कौटजं सैन्धवंविडम् ।
चूर्णं तक्रेण संपीतं दुर्नाम्नां नाशनं परम् ॥ ४३ ॥

टाटर, चीते की छाल (यहां रक्तचित्रक लेना उत्तम है) सोंठ, इन्द्रयव, सेंधानमक, विडङ्ग इनका चूर्ण गाय के मठा से सेवन किया अर्श का नाश करता है ॥ ४३ ॥

लवङ्गं घृतसंपीतं रक्तार्शो नाशनं परम् ।

लौंग का चूर्ण गौ घृत से भक्षण किया रक्तार्श (खूनी बवासीर) का नाश करता है ।

—०—०—

अथ भगन्दर चिकित्सा ।

दन्ती निशामलक कल्कितलेपनेन ।
प्रातर्भगन्दर दरोत्त्रिनि वृत्तिमेति ॥
शुंठी वरच्छद बरासुर दारुजाती ।
पत्राणि सैन्धव युतान्यथवा प्रलेपात् ॥ ४४ ॥

दन्ती, हल्दी, आमला इनका कल्क कर प्रातः भगन्दर के ऊपर लेप करने से भगन्दर का नाश होता है । अथवा—शुंठी, वटके पत्ते, शतावरी, देवदारु, जावित्री, सेंधा नमक इनका लेप करने से भगन्दर का नाश होता है ॥ ४४ ॥

अथ गुल्मौषधम् ।

सौवर्चलं सैन्धवञ्च रामठं विश्व भेषजम् ।
शृङ्गवेरं विडंकृष्णाजमोदायाव शूकजः ॥ ४५ ॥
हरीतकी विडंगानि समभागानि कारयेत् ।
एषां चूर्णं घृतेनाद्याद् गुल्माजीर्णार्शसांक्षयः ॥ ४६ ॥

सोंचर नमक, सेंधा नमक, घी में भुनी हींग, सोंठ, आद्रक, विट्लवण, पिप्पली, अजमोदा* (बड़ा अजवायन) यवक्षार, हरड़, विडङ्ग सम भाग ले सब वस्तु पीसकर चूर्ण करे, यह चूर्ण गो-घृतसे सेवन किया गुल्म, अजीर्ण और अर्श का नाश करता है ॥४६॥

अथामवात चिकित्सा ।

शिग्रुसर्षप शुंठीभ्यो द्विगुणो देवदारुकः ।
आर नालेन संलिप्य नाशये दाम शोथताम् ॥ ४७ ॥
कृष्णापाठा कंटकारी शुंठ्यजाजी हरीतकी ।
ग्रन्थिक चित्रकं मुस्तं गजकृष्णा समांशतः ॥ ४८ ॥
चूर्ण मुष्णाऽम्बुना पीतमामवातार्ति नाशनम् ।
मन्दाग्नि शूल प्लीहानां कासं श्वासञ्च नाशयेत् ॥ ४९ ॥

सिहांजना के बीज, सरसों, सोंठ एक २ भाग, देवदारु दो भाग इनको कांजी में पीसकर आमवात की सूजन पर लेप करने से आराम होता है तथा पिप्पली, पाढ़, कटेरी, शुंठी, कालाजीरा,

*अन्तः संमार्जने प्रोक्ताजमोदा च यवानिका ।
वहिः सम्मार्जनेप्रोक्तानमोदा चा जमोदिका ॥

हुरड, पीपलामूल, चीता, नागरमोंथा, गजपीपल सम भाग ले चूर्ण कर गरम जल से सेवन करने से आमवात की पीड़ा दूर होती है और मन्दाग्नि, शूल, प्लीहा (तिल्ली) कास (खांसी) श्वास (दमा) का भी नाश करता है ॥ ४६ ॥

अथ शूलौषधम्।

×तुम्बरुण्यभया हिंगुक्षारश्च लवण त्रयम्।
यवानी पौष्करं मूलं विडंगं सम भागतः ॥ ५० ॥
त्रिवृदत्र त्रिगुणिता चूर्ण टङ्कत्रयंपिवेत्।
तप्ताम्बुना शूल गुल्म कफाध्मानाम वातनुत् ॥ ५१ ॥

तुंबरू (तेजबल के बीज) हरड, घी में भुनी हींग, यवक्षार, तीनों लवण (सेंधा, सोंचर, विड नमक) अजवायन, पोहकरमूल, विडङ्ग यह सब औषधीं सम भाग, निसोत तीन भाग इनका चूर्ण तीन टङ्क (१२ मासा) की मात्रा से गरम जल के साथ सेवन करने से शूल, गुल्म (गोला) कफ, आध्मान और आमवात (गठिया) का नाश करता है। १२ मासा ही की मात्रा पर निर्भर नहीं रहना चाहिये देश काल अवस्था बलाबल के अनुसार न्यूनाधिक कर लेनी चाहिये ॥ ५०-५१ ॥

—०—०—

अथोदर रोगौषधम्।

क्षारत्रयं पञ्चपटू नि कृष्णा तथानिशेद्वे विनियोजनीया।
मुस्ताग्निरोथा यवसार कुष्ठतीक्ष्णश्च कौमारिकया विभाव्यः ॥५२॥
यामद्वयाग्नौ परिपक्वमे तत्सर्वोदराणां प्रशमं करोति।
वटीकृता शाणमिता प्रदत्ता मन्दाग्नि शूलादि विनाशिनी च ॥५३॥

×तुम्बरुः सौरभः सारो वतजः सानु जोनिजः।
तीक्ष्णत्वचस्तीक्ष्ण फलस्तीक्ष्ण पर्णी महामुनिः॥ इति धन्वन्तरिः॥

सज्जीक्षार, यवक्षार, शुद्ध सुहागा, पांचो लवण (सेंधा, सांभर, सौंवर, विड, समुद्र नमक) पिप्पली, हल्दी, दारुहल्दी, मुलहठर (पलुआ) यवक्षार (दो वार यवक्षार कहा है अतः अन्य औषधियों से द्विगुण लेना) मरिच सम भाग इनका वारीक चूर्ण कर घीगुवार के रस में दो प्रहर कढ़ाई में धरकर अग्नि पर पका कर ४ माशा की गोली करे यह गोली सम्पूर्ण उदररोग, मन्दाग्नि और शूलादियों का विनाश करती है । एक मासा की गोली से भी उपरोक्त लाभ होजाता है ॥ ५२-५३ ॥

तथाच—

स्वर्जिकं मरिचं शुंठो कृष्णाचेति चतुष्टयम् ।
तप्तोदकेन संपीत शूल रोग हरं परम् ॥ ५४ ॥

सज्जीक्षार, मरिच, शुण्ठी, पिप्पली इन चार औषधों का चूर्ण उष्ण जल से सेवन किया उदर सम्बन्धी शूलों के नाश करने में अत्युत्तम है ॥ ५४ ॥

अथ पाण्डुरोगौषधम् ।

किरातवासा निम्बश्च त्रिफला कटुकामृता ।
कषायमेषां मधुनापीत्वा पाण्डु गदं जयेत् ॥ ५५ ॥

चिरायता, अडूसा, नीम, हरड, बहेड़ा, आमला, कुटकी, गिलोय इनका क्वाथ तैयार कर शहत मिला पीने से पाण्डु रोग को जीतता है ॥ ५५ ॥

तथाच—

रजन्यामलकं लोह चूर्णं त्रिकटुकं तथा ।
सर्पिर्मधुयुतं चूर्णं कामला पाण्डु नाशनम् ॥ ५६ ॥

---

*एकमप्यौषधं योगे यस्मिन्नयत्पुनरुच्यते ।
मानतो द्विगुणं प्रोक्तं तद्द्रव्यं तत्त्वदर्शिभिः ॥

हल्दी, आमला, मण्डूर भस्म; पिप्पली, मरिच, शुंठी इनका चूर्ण घी और शहत से सेवन किया कामला और पाण्डरोग का नाश करता है ॥ ५६ ॥

कामलारोगेऽञ्जनम् ।

गैरिकामलक युक्त हरिद्रा पेषयाहि नयनाञ्जन मेतत् ।
कामलाख्य हरणं करणीयमन्नपथ्यमुदिता हिमसूराः ॥ ५७ ॥

गेरू, आमला, हल्दी इनको बारीक कपड़छन चूर्णकर नेत्रों में आंजने से कामला (यरकान) का नाश होता है। इस रोग में पथ्य मसूर ही हितकारी है। अन्य ग्रन्थों में इस चूर्ण का अञ्जन शहत के साथ लिखा है वैसा ही करना चाहिये ॥ ५८ ॥

अथ क्षयरोगौषधम् ।

महौषधं कणादेव कुसुमान्यश्वगन्धिका ।
सशर्कर पेयमिदं क्षयघ्नं निम्बवारिणा ॥ ५८ ॥

शुंठी, पिप्पली, लौंग, असगन्ध, मिश्री इनका चूर्णकर नीब के जल से सेवन किया क्षय रोगका नाश करता है ॥ ५६ ॥

तथाच--

त्रिकटु त्रिफलामुस्तं त्रुटित्वङ नागकेसरम् ।
रास्ना लवंगं देवद्रु विडङ्गं पद्मपल्लवाः ॥ ६० ॥
ग्रंथिः श्चेति सर्वेभ्यो द्विगुणालित शर्करा ।
एतच्चूर्णं क्षयहरं भक्षितस्याद्यथाबलम् ॥ ६१ ॥

त्रिकटु (पिप्पली, मरिच, शुण्ठी) हरड़, बहेडा, आमला, नागरमोथा, छोटीइलायचीका दाना, दालचीनी, नागकेसर, रहसन, लौंग, देवदार, विडङ्ग, कमलफूल का पत्ता, पीपलामूल यह सब औषधों सम भाग लेकर चूर्ण करे चूर्ण से द्विगुण मिश्री मिलावे यह चूर्ण बलाबल देखकर रोगी को देना चाहिये यह क्षयरोग का नाश करता है ॥ ६० । ६१ ॥

श्रीहरिरायशर्म्म विरचिते हरिधारित ग्रंथेऽर्शोरोगादि ।
क्षयान्तचिकित्साध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥ समाप्ति ।

—०—०—

अथ हिक्कौषधम् ।

कोलास्थि मज्जा मरिचं पिष्ट्वा समधु शर्करम् ।
चूर्ण मेतन्नरो लिह्यात्सर्वहिक्कां विनाशयेत् ॥ ६२ ॥

बदरीफलकामगज, मरिच, मिश्री, यह पीसकर शहत में मिलाय चाटने से सम्पूर्ण हिचकी दूर होती है ॥ ६२ ॥

अथ छर्दिरोगौषधम् ।

लाजैला चन्दनं कृष्णा लवङ्ग पद्मबीजकम् ।
कोला मज्जा मोचरसः प्रियंगुर्नागकेसरम् ॥ ६३ ॥
एतच्चूर्णं मधुसिता युतं प्रातर्लिहेन्नरः ।
छर्दयस्तस्य नश्यन्ति सर्वा अपि न संशयः ॥ ६४ ॥

लाजा (धानकालावा) इलायची, सफेद चन्दन, पिप्पली, लौंग, कमल का बीज, बेरकामगज, मोचरस, मेहँदी के बीज, नागकेसर इनका चूर्ण कर प्रातःकाल मिश्री और शहतके संग चाटा हुआ सर्व प्रकार की छर्दि (वमन)का निश्चय से नाश करता है ॥६४॥

तथाच—

लाजैला देव कुसुमं पद्मबीजं सितामधु ।
प्रातरेतन्नरो लिह्याच्छर्दिरोग विनाशनम् ॥ ६५ ॥

धान की खील, लौंग, कमल का बीज, मिश्री और शहत से इनका चूर्ण प्रातः चाटा हुआ छर्दिरोग का नाश करता है ॥ ६५ ॥

अथ श्वासौषधम् ।

त्र्यूषणं पौष्करं शृङ्गी शटी भर्गी च तोयदः ।
एतच्चूर्णं जयेच्छ्वासं पीतं संतप्त वारिणा ॥ ६६ ॥

पिप्पली, मरिच, शुण्ठी, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, कचूर, भारङ्गी, नागरमोथा इनको सम भाग लेकर कूट पीसकर बारीक चूर्ण करे, यह चूर्ण गरम जल से सेवन किया श्वास (दमा) का नाश करता है ॥ ६६ ॥

अथ श्वासकास चूर्णम्।

क्षुद्रा पुष्करमूलञ्च वासा शुण्ठी कुलत्थकम्।
तप्तोदकेन संपीतं श्वास कास विनाशनम्॥ ६७॥

कटेरी, पोहकरमूल, अडूसा, शुंठी, कुलथी इस चूर्ण को उष्ण जल से सेवन किया जाय तो श्वास, कास का नाश होता है ॥६७॥

कासघ्नीवटी।

महौषधं दाडिमत्वक् शृङ्गी भार्गी विभीतकम्।
कणा चैषां वटी वक्त्रे कासघ्नी धारिता निशि॥ ६८॥

शुण्ठी, अनारफल की छाल, काकड़ासिंगी, भारंगी, बहेड़ा, पिप्पली इनको कूट पीस कर गोली बनावे यह गोली रात को मुख में धरकर रस चूसते रहना चाहिये इससे कास (खांसी) का नाश होता है, शहत से गोली बनाई जाय तो अच्छी है॥ ६८॥

तथाच—

वासाशुंठी कणाक्षौद्रवटी कास विनाशिनी।
क्षुद्रा वासा कणा शुंठी चव्य मुस्ताम्बु नाथवा॥ ६८॥

अडूसा, शुंठी, पिप्पली इनको शहत से गोली बनावे अथवा उपरोक्त औषधियों की गोली अधोलिखित कटेरी, अडूसा, पिप्पली, शुंठी, चवक, नागरमोथा इनका क्वाथ तैयार करे इसमें गोली बनावे यह गोली भी रात को मुखमें धरनी चाहिये इससे कास का नाश होता है॥ ७०॥

मन्दाग्नौचूर्णम्।

त्रिवृत्कणा भया शुंठी सौवर्चल समन्विता।
संपिष्य तप्ततोयेन पीतं वह्नि करं परम्॥ ७०॥

निशोत, पिप्पली, हरड़, शुंठी सोंचर नमक यह सम भाग ले बारीक चूर्ण कर गरम जल से सेवन किया मन्दाग्नि को दीपित करता है और पाखाना साफ लाता है। ॥ ७१॥

तथाच-

पटु द्वयं विडंगञ्च त्रिफला त्र्यूषणं त्रिवृत् ।
लवंगं चित्रकं हिंगु दाडिमं जीरकद्वयम् ॥ ७१ ॥
यवानी चेति सम्भाव्यं त्रिभिर्निम्बूकजैः रसैः ।
प्रातश्चतुर्द्वयं चूर्णं दत्तं मन्दाग्नि बोधकम् ॥ ७२ ॥

दोनों नमक—(सेंधा, सोंचर नमक) विडंग, हरड़, बहेड़ा आमला, पिपली, मरिच, सुंठी; त्रिशोत; लौंग, चीता, घी में भुनी हींग, अनारदाना, दोनों जीरा (काला और सफेद) अजवायन इन औषधियों का सम भाग बारीक चूर्ण कर कागजी नीबू के रस की तीन भावना देवे बाद छाया में सुखा कर रख ले, इस चूर्ण को ८ मासा सेवन करने से मन्दाग्नि दीप्त होता है, हाजमा के लिये यह परमोत्तम है ।

विशूचिकाखल्ली शूलौषधम् ।

हेमक्षा सैन्धवं कुष्टं तप्ततैल विमिश्रितम् ।
खल्ली शूल विसूच्यघ्नं मर्दितं कर पादयोः ॥ ७३ ॥

×चोक, सेंधा नमक, कूठ इनको बारीक पीस तिलों के तैल में पकावे इसकी हाथ और पाओं के तलुओं में मालिश करने से, खल्ली शूल विशूचिका (कालरा, हैजा) में विशेष लाभ होता है ॥ ७३ ॥

श्रीहरिराय शर्म्म विरचिते हरिधारित ग्रन्थे
हिक्का, छर्दि, श्वास, कास, मन्दाग्नि, विशूचिका रोग
प्रतीकारः तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

—०—

×सत्यानाशी (बङ्गकटली) की जड़ को चोक कहते हैं ।

अथांडवृद्धिरोगौषधम्।

सुरङ्गं सार्षपं तैलं सैंधवाजाजि रामठैः।

प्रातः संलिप्यतेनाण्डवृद्धिःशान्ति मुपैत्यलम् ॥ ७४ ॥

सैंधानमक, जीरा, हींग, समभाग कूट पीसकर सरसों के तैल में पकाकर सुबह अण्डकोशों पर लेप करने से निश्चय से अण्डवृद्धिरोग शान्त होता है ॥ ७४ ॥

अथ प्रमेहौषधम्।

वंशजं दाड़िमकुसुमे समखण्डे चूर्णिते दशाहान्तः।

षट् टङ्क मिदं चूर्णं भुक्तं सचूर्ण यत्यलं मेहान् ॥ ७५ ॥

तबशीर, अनार के फूल इनका समभाग चूर्ण कर चूर्ण के बराबर मिश्री मिलावे २४ मासा इस चूर्ण को १० दिन तक सेवन करने से सब प्रकार के प्रमेह नष्ट होते हैं ॥ ७५ ॥

तथाच–

स्थूलैला समखण्ड चूर्णं कर्ष प्रमाण तो भुक्तम्।

हन्ति प्रमेह मथवासमसितमेला शिलाज शंखिन्या ॥७६॥

बड़ी इलायची का दाना और मिश्री, दोनों का समभाग चूर्णकर एक तोला मात्रा के परिमाण से सेवन किया प्रमेहों का नाश करता है अथवा इलायची, शिलाजीत उत्तम शुद्ध, शंखपुष्पी (शङ्खहूली) समभाग चूर्ण कर सब चूर्ण के समान मिश्री मिला भक्षण करने से प्रमेह नष्ट होते है ॥ ७६ ॥

अथ मूत्रकृच्छ्रौषधम्।

एला कृष्णा गोक्षुरू रेणुका च वासैरण्श्चाश्म भेदो मधुश्च।

क्वाथो ह्येवामश्मजिच्छर्कराढ्यः पीतो नाशो मेहकृच्छ्राश्मरीणाम् ॥७७॥

इलायची, पिप्पली, गोखरू, खरभालुके बीज, अडूसा, एरण्ड-मूल, पाषाणभेद, मुलहठी इनका विधि पूर्वक क्वाथ तैयार कर मिश्री मिलाकर सेवन करे तो इससे प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, (पथरी का विनाश होता है ॥ ७७ ॥

तथाच--

वासैलैरण्डचूर्णं च दध्नामूत्राख्य कृच्छ्रजित् ।

यवक्षारस्तु सितया सर्व कृच्छ्र निवर्हणः ॥ ७८ ॥

अडूसा, इलायची, एरण्डमूल इनका चूर्ण दही से सेवन करने पर मूत्रकृच्छ्र का नाश होता है । अथवा—

यवक्षार मिश्री से भक्षण किया सब प्रकार के मूत्रकृच्छ्रों का विनाश करता है ॥ ७८ ॥

अथ मूत्ररोधौषधम् ।

आखुविष्टा मेव पिष्टां जल प्लुष्टांतु लेपयेत् ।

नाभिदेशे ततो मूत्र प्रवाहो जायते क्षणात् ॥ ७६ ॥

मूषक (चूहा) की विष्टा जल में पीस कर नाभि में लेप करने से तत्क्षण मूत्र का प्रवाह चलेगा खुलकर पिशाब आने से रोगी कष्ट से मुक्त होता है ॥ ७६ ॥

तथाच-

त्रिकंटको यवासश्च कर्णिकारोश्म भेदकः ।

क्वाथ एषां मधुयुतो मूत्रं वाहयति क्षणात् ॥ ८० ॥

गोखरू, ४ धमासा, कोपल, पाषाणभेद इनका क्वाथ, शहद मिला कर पिलाने से मूत्र प्रवाह चलता है ॥ ८१ ॥

अथाश्मर्य्यौषधम् ।

वारुणस्य त्वचं श्रेष्ठ शुंठी गोक्षुर संयुतम् ।
यवक्षारं गुडं दत्वा क्वाथ पीत्वा पिबेद्धितत् ॥ ८२ ॥
अश्मरी वातजां हन्ति चिरकालानु बन्धिनीम् ।

वरुण (वरणा) वृक्ष की छाल, सोंठ, गोखरू इनका क्वाथ तैयार कर यवक्षार पुराना गुड मिलाकर पिलाने से वायु सम्बन्धी पुरानी अश्मरी (पथरी) नष्ट होती है ॥ ८२ ॥

अथापस्मारौषधम् ।

पुष्करं देवदारुश्च ब्राह्मी शुण्ठी शठीवचा ।
किरात ग्रन्थिकं दूर्वा शिवा कुष्ठं पयोधरः ॥ ८३ ॥
शिरीषत्वक् तथैषां वै क्वाथोऽपस्मार रोगजित् ।
विसूचिकोन्मादहरः कथितोप्येष एवहि ॥ ८४ ॥

पोहकरमूल, देवदारु, ब्राह्मी, शुंठी, कपूरकचरी, वच, चिरायता, पीपलामूल, दूर्वा (दूर्व) हरड कूठ, नागरमोथा, शिरीष की छाल इनका क्वाथ पिलाने से अपस्मार (मृगी) का नाश होता है ॥ ८३-८४ ॥

और यही क्वाथ पिलानेसे विसूचिका (हैजा) कालरा, उन्माद का भी नाश करता है ।

अथात्रनस्यं ।

स्नोहुण्डमध्ये मरिचान्येकविंशत्यहस्थिताम् ।
जलेन घृष्टानस्यं स्यादपस्मार विनाशनम् ॥ ८५ ॥

थोहर का एक दण्ड लेकर इसके गूदे में कालीमिर्च भरकर २१ दिन उसमें रहने के बाद निकाल कर मरिच बोतल में भर रखे इन मरिचों को जल से पीसकर नसवार लेने से अपस्मार का नाश होता है ॥ ८६ ॥

ब्राह्मीघृतम् ।

ब्राह्मी रस वचा कुष्ठं शंखिनीभिः स्मृतं घृतम् ।

गव्यं शुद्ध मिदंपीत मुन्मादापस्मृती हरेत् ॥ ८७ ॥

ब्राह्मी का स्वरस, वच, कूठ, शंखपुष्पी इन औषधों से गो-घृत, घृत पाक विधि से तैयार करें यह ब्राह्मी घृत है। इसके सेवन से उन्माद (पागलपना) और अपस्मार का नाश होता है ॥ ८७ ॥

—:०:—

अथ कुष्ठचिकित्सा ।

पटोल त्रिफलारिष्टं वासाखदिर कुंडली ।

चूर्णं तूर्णं जयेदेतत्कुष्टं नीरेणपायितम् ॥ ८८ ॥

पर्वल, हरड, बहेड़ा, आमला, नीम, अडूसा, कत्था, गिलोय इनका चूर्ण बनाकर जल से सेवन किया हुआ शीघ्र ही कुष्ठ का नाश करता है ॥ ८८ ॥

तथाच—

मंजिष्ठा त्रिफलारिष्ट गडूची कटुका निशा ।

देवदारु वचा चेति क्वाथो वाताश्रितं जयेत् ॥ ८९ ॥

मजीठ, हरड बहेड़ा, आमला, नीम, गिलोय, कुटकी, हलदी, देवदार, वच इनका क्वाथ सेवन किया हुआ वाताश्रित कुष्ठ का नाश करता है ॥ ८९ ॥

तथाच—

गुंजारिष्ट वचा चित्रं कुष्ठंकांजिक पेषितम् ।

श्वेत कुष्ठं विजयते लेप एषो न संशयः ॥ ९० ॥

घूंगची (रत्ती) नीम के बीज, वच, चीता, कूठ इनको कांजीमें पीसकर लेप करने से निश्चय से श्वेत कुष्ठ दूर होता है ॥ ९० ॥

तथाच-

मनःशिला वङ्गभस्म सोमराजी च चित्रकम्।
कांजिकेन समापिष्टं कुष्टं लेपनतो जयेत्॥ ६१॥

मनशिला वङ्ग (रांगा) की भस्म, बाकुची चीता इनको कांजी में बारीक पीसके इसका लेप करने से कुष्ट का नाश होता है॥६१॥

सर्वकुष्टहरोलेपः।

हरितालं वचा ब्रह्मी शिवा हिंगुकटुत्रिकम्।
सोमराजी हरिद्रेद्वे सुराष्ट्री कुष्ट चन्दनम्॥ ६२॥
सर्जिकञ्च यवक्षारं गन्धकं पारदं तथा।
सिद्धार्थाश्च विडगानि प्रपुन्नाश्च सैन्धवम्॥ ६३॥
शिवाम्बुना लेपयेो मासार्द्धात्सर्वकुष्टजित्।
गण्डमालां दद्रुकण्डूं कण्ठमालां विचर्चिकाम्॥ ६४॥

हरतालतबकी, वच, ब्रह्मी, हरड, हिंगु, पिप्पली, मरिच, सोंठ, बावची. हलदी, दारुहलदी, फटकरी, कुठ, सफेद चन्दन, सज्जीखार, यवक्षार, गन्धक, पारा, सफेद सरसों, विडङ्ग, प्रपुन्नाट, (पवाड) सेन्धानमक प्रथम गन्धक और पारे की कज्जली कर पीछे सब औषधियों का चूर्ण मिलाके आमलों के रसमें घोटकर लेप करने से १५ दिन के प्रयोग से सम्पूर्ण कुष्टों का नाश होता है॥ ६४॥

तथा—गण्डमाला, दद्रु, कण्डू, कण्ठमाला, विचर्चिका भी दूर होते हैं।

अथ पामालेपः।

सिन्दूरं मरिचं तुल्यं महिषी घृत संयुतम्।
मथित्वा लेपनादेव पामा रोग विनाशनम्॥ ६५॥

सिन्दूर मरिच सम भाग लेकर भैंस के घी में मिलाकर खूब हल करे इसका लेप करने से पामा (खुजली) रोग का विनाश शीघ्र ही होता है॥ ६५॥

पामा दद्रू विचर्चिकासुलेपः ।

प्रपुन्नाटस्य बीजानि गन्धकं हिंगुलं गुडम् ।
विडङ्गसिन्दूरनिशाः शण जातिफलानि च ॥ ९६ ॥
हेमाह्वारिष्टतास्बूलरसाश्चैकत्र पेषिताः ।
एषांलेपेन नश्यन्ति पामा द्रद्रूविचर्चिकाः ॥ ९७ ॥

पवाड के बीज, गन्धक, सिंगरिफ, गुड़, विडंग, सिन्दूर, हलदी, सन के बीज, चोक, नीम इनको बारीक पीस पान के रसमें घोटकर लेप करने से पामा, दद्रु, विचर्चिका रोग का विनाश होता है ॥९७॥

लूता विषौषधम् ।

सारिवापद्म बीजानि निर्गुण्डो बीज चन्दनम् ।
कुष्टेन सहितं पिष्टं नीरे लूताविषापहम् ॥ ९८ ॥

सारिवा (अनन्तमूल) कमलबीज संभालु के बीज, चन्दन कूठ इनको जलमें पीसकर लेप करने से लूता (मकड़ी) का विष (ज़हर) शान्त होता है ॥ ९८ ॥

—०—०—

अथ सिध्मौषम् ।

संपिष्य रजनीमेकां कदलीपत्र भस्मना ।
नीरेणसहलेपोऽयं सिध्मारोग निषूदनः ॥ ९९ ॥
कर्पूरं चन्दनं तालं टंकणं मूलकस्य च ।
बीजानि जंभीर रसैर्लेपः सिध्मा विघ्ननः ॥ १०० ॥
गंधकं चन्दनं पिष्ट्वा रसैर्निम्बूक सम्भवैः ।
सप्ताहांतरतः सिध्मालेपनादस्य नश्यति ॥ १०१ ॥

केवल हल्दी का चूर्ण और केला के पत्ते की भस्म दोनों सम भाग लेकर जल में पीस लेप करने से सिध्मा का नाश होता है ॥ ९९ ॥

अथवा—कपूर, चन्दन, हडताल तबकी सुहागा मूली के बीज इनको जम्बीरी के रस में पीसकर लेप करने से भी ÷ सिध्मा का नाश होता है।

अथवा-गन्धक चन्दन इन दोनों को कागजी नीबूके रस से घोट कर एक सप्ताह (हफ्ता) इसका लेप करने से सिध्मा का नाश होता है ॥ १०१ ॥

अथश्वानविषौषधम् ।

रामठं शङ्खपुष्पी च पिष्ट्वा संलिप्यतन्मुखम् ।
सर्षपाक्ताश्वत्थ दलं दत्वा काशविशंजयेत् ॥ १०२ ॥

हींग, शङ्खपुष्पी को पीसकर विष स्थान पर लेपकर बाद उसपर सरसों का लेपकर पीपल के पत्ते बांधने से काश विष को शान्ति होती है ॥ १०२ ॥

अथ शस्त्राघातौषधम् ।

काकजङ्घा जटाचूर्णं शस्त्रघातिधापयेत् ।
पीडां रक्तप्रवाहश्च क्षणादेव विनाशयेत् ॥ ३ ॥

काकजङ्घा एक प्रसिद्ध बूटी हर जगह मिल सकती है, इसकी जड़ का चूर्ण व्रण (शस्त्र के जखम) पर बांधने से जखम से चलते हुए खून के प्रवाह को रोकता है और पीड़ा भी शीघ्र ही शान्त होती है । ॥ ३ ॥

श्रीहरिराय शर्म्म विरचिते हरिधारित ग्रंथे अण्डवृद्धि
प्रमेह मूत्रकृच्छ्र मूत्ररोधापस्मारोन्मादादादि
प्रतीकारोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

—०—०—

÷ सिध्मा—इसे भाषामें बनरफ कहते हैं इसमें छोटे २ दाग शरीर में पड़ते हैं ।

अथ वातव्याध्याधिकारः ।

निर्गुण्डी विजयामुंडी मार्कवाणां सुचूर्णकम् ।
वात व्याधि हरं प्रोक्तं मुक्त टङ्क द्वयं मितम् ॥ ४ ॥

संभालु, भांग, मुंडी, भांगरा इनका सम भाग चूर्ण कर ८ मास परिमाण मात्रा सेवन किया वातव्याधि को हरता है ॥ ४ ॥

वातघ्नीवटी ।

विडङ्गं पञ्चकोलानि कारवीचाश्व गन्धिका ।
यवानी चेति संचूर्ण्य कुट्टयेद् द्विगुणे गुडे ।
टङ्क द्वयं त्रयं वापिवटी वातरुजापहा ॥ ६ ॥

विडंग ×पञ्चकोल, कलौंजी, असगन्ध, अजवायन इनका समभाग चूर्ण कर चूर्ण से दो गुणा अधिक पुराना गुण मिला कर इमामदस्ता में धर कर अच्छे प्रकार कूट कर दो टंक अथवा तीन टंक की गोली बनावे (टङ्क ४ मासे का होता है) यह गोली वातव्याधि का नाश करती है ॥ ६ ॥

वातपीड़ाहरः कषायः ।

शुंठी रास्ना देवदारु ह्येरण्डा मृतवल्लरी ।
पीता कषाय एतेषां वातपीडा हरः परः ॥ ७ ॥

सोंठ, रहसन, देवदार, एरण्डमूल, गिलोय इनका क्वाथ वातव्याधि नाशक है इसे अन्यग्रन्थों में (रास्नापञ्चक) कहते हैं यह सप्तधातु गत वातनाशक है सामवात का नाशक है ॥ ७ ॥

॥ इति पंच कोलम् ॥

× पिप्पली पिप्पलीमूल चव्य चित्रक नागरैः ।

अथ लघु विष गर्भ तैलम् ।

धत्तूरबीजं गुञ्जांच विष कर्ष द्वयं पृथक् ।
तुल्यं धत्तूरकरसं तैलप्रस्थे विपाचयेत् ॥ ८ ॥
विष गर्भ मिदं तैलं मर्द्दनाद्वातरोगजित् ॥

धतूराके बीज, घुंघची (रत्ती) विष दो २ तोला प्रत्येक औषधि लें इनके बराबर धतूरा का रस एक प्रस्थ तिल तैल, इसे तैल पाक विधान से तैयार करे यह लघु विष गर्भ तैल है, इसकी मालिश करने से वात रोग नष्ट होते हैं ॥ ८ ॥

सर्ववातरोगेषु त्रयोदशांग गुग्गलुः ।

शुंठी ज्योतिष्मती रास्ना वाजिगन्धा त्रिकंटकम् ॥ ९ ॥
त्रिवृद्गुडूची कर्चूरं शतपुष्पा शतावरी ।
पिप्पली पिप्पलीमूलं यवानी च मिसिस्तथा ॥ १० ॥
गुग्गलुः सर्व तुल्यांशस्त दर्द्धं गोघृतं क्षिपेत् ।
कुट्टयित्वावटी कार्या टङ्क युग्म प्रमाणतः ॥ ११ ॥
घृतेनवाकोष्णजलेन वापिक्षीरेणवामांसरसेनवापि ।
कटीग्रहं योनिदोषं कुब्जत्वञ्च हनुग्रहम् ॥ १२ ॥
जानु नाडी पाद पृष्ठ मज्जा संधि गतानिलम् ।
निहन्ति सर्वान्वातोत्थान् रोगानेषा वटी शुभा ॥ १३ ॥

शुंठी, मालकँगुनी, रहसन, असगंध, गोखरू, निशोत, गिलोय, कचूर, सोवा के बीज, शतावर, पिप्पली, पीपलामूल, अजवाइन, सौंफ इनका समभाग चूर्ण करे चूर्ण के समान गुग्गलु उत्तम शुद्ध मिलावे गुग्गलु से आधा गाय का घी सब इकट्ठी चीज़ कर इमामदस्ता में धरकर भलीभांति चोटें लगावे। यदि लाख चोट लगाई जाय तो अत्युत्तम है, इसकी मात्रा दो टङ्क (८ मासा की है परन्तु ८ मासा की गोली ही का नियम नहीं समझना चाहिये बलाबल

के अनुसार वैद्यवर मात्रा कल्पना करले । गा घृत अथवा गर्म पानी, गोदुग्ध, मांस के रस से सेवन करना चाहिये । इससे कमर का जकड़ना योनिदोष, कुबड़ापन, हनुग्रह और जङ्घा, नाडि, पाद, पीठ, मज्जा तथा सन्धिगत वात और भी सम्पूर्ण वात रोगों का नाश होता है ॥ १३ ॥

—०—

अथ पित्तोद्रेकौषधम् ।

चन्दनोशीर कर्पूरं ह्येलामलक मिश्रितम् ।
शीतोदकेन संपीतं पित्तोद्रेक निवारणम् ॥ १४ ॥

चन्दन, खस, कपूर, इलायची, आमला इनका समभाग चूर्ण कर शीतल जल से सेवन करे इसके सेवन से अत्यन्त बढ़ा हुआ भी पित्त शान्त होता है ॥ १४ ॥

अथ पित्तदाहे लेपः ।

बदरीपल्लवामांसी तण्डुला मलकानि च ।
शीतांम्बुनापाद लेपः पित्तदाह हरः परः ॥ १७ ॥

बेर के पत्ते, बालछड़, चांवल आमला इनको शीतल जलमें बारीक पीसकर पावों के तलुओं में लेप करने से पाद दाह नष्ट होता है ॥ १६ ॥

अथ क्लेदौषधम् ।

खर्जूरैला पद्मबीजं पिष्ट्वा शीताम्बुनासह ।
पिबेत्तुक्लेदनाशाय छर्दिनाशाय चोत्तमम् ॥ १७ ॥

खजूर (छोहारा) इलायची, कमल का बीज, शीतल जल में पीसकर पिलाने से क्लेद (जी का मिचलाना) और वमन के नाश के लिये उत्तम है ॥ १७ ॥

अथ कफकोपौषधम्

कुंकुमं मरिचं भार्गी पिप्पली मृततास्रकम्।
लवङ्गञ्चेति ताम्बूलदलैः शाणार्द्ध मानतः॥
चूर्णं हन्ति कफं वृद्धं कास श्वास ज्वरन्तथा।
लवङ्गं पिप्पली भार्गी कण्टकारी महौषधम्॥ १६॥
चूर्णं सेवा कफहरं पीतं शीताम्बुनासह॥

केशर, कालीमिर्च, भारङ्गी, पिप्पली, उत्तम ताम्रभस्म, लौंग इनका बारीक चूर्ण करले। यह चूर्ण २ मासा पान के रससे सेवन किया बढ़े हुए कफ और कास श्वास तथा कफज्वर का नाश करता है।

अथवा—लवङ्ग, पिप्पली, भारङ्गी कटेरी, शुंठी इनका चूर्ण शीतल जल से सेवन किया कफ का नाश करता है॥ १६॥

अथ गण्डमालौषधम्।

विश्वौषधि समंभार्गी पिष्टा तण्डुल वारिणा।
कण्ठलेपनमात्रेण गण्डमाला मलं जयेत्॥ २०॥

शुंठी के समान भाग भारङ्गी, चावलों के धोवन से पीस कण्ठ में लेप करने से कुछ दिन के अभ्यास से गंडमाला रोग का नाश होता है॥ २०॥

काञ्चनार गुग्गलुः।

पालानां दशक ग्राह्यं काञ्चनार तरुत्वचः॥ २१॥
पलत्रयं त्र्यूषणञ्च त्रिफलाषट् पलानि च।
वारणा पलमेकञ्च÷ त्रिसुगन्धं त्रिकर्षकम्॥ २२॥
कौशिकं सर्वतुल्यांशं कृत्वा टंकमितावटीम्।
खदिरस्या भयायावा मुञ्च्या च कथितेनवै॥ २३॥

÷त्वगेलापत्र कैस्तुल्यैस्त्रि सुगन्धं त्रिजातकम्।

हत्वाहरेद्गण्डमालयं व्रणं कुष्ठं भगन्दरम् ।
गुल्मार्बुद प्रमेहांश्च गुग्गलुः काञ्चनारकः ॥ २४ ॥

कचनार वृक्ष की छाल १० पल (४० तोला) पिप्पली; मरिच, सोंठ यह तीनों तीन पल अर्थात् प्रत्येक औषधि ४-४ तोला, हरड, बहेड़ा, आमला प्रत्येक दो २ पल वरुण वृक्ष की छाल १ पल (४ तोला) दालचीनी, इलायची, तजपत्र एक २ तोला सम्पूर्ण औषधि द्रव्य के समान उत्तम शुद्ध गुग्गलु मिलाकर सुरीत से इमामदस्ते में कूट लेना चाहिये, बाद ४ मासा की गोली बनाकर खदिर (खैर) की छाल का या हरड व मुण्डी के क्वाथ से सेवन कराया हुआ यह कांचनार गुग्गलु गण्डमाला, व्रण, कुष्ट, भगन्दर, गुल्म, अर्बुद, प्रमेहादि अनेक रोगों का नाश करता है ॥ २४ ॥

अथ मुख रोगौषधम् ।

त्वक्क्षीरी खादिरंसारं मुरातु द्विगुणामता ।
चूर्णयित्वा मुखेक्षिप्ता मुखपाकं विनाशयेत् ॥ २५ ॥

तबाशीर, कत्था सम भाग बालछड़ दोनों के बराबर लेकर बारीक चूर्ण करले यह चूर्ण मुख में बुरकाया मुख पाक को शान्त करता है ॥ २५ ॥

अथ दन्त रोगौषधम् ।

मुस्तकं खादिरः सारोवासाभो ध्रसिता कटुः ।
मंजिष्ठा कुंकुमं तत्र पिष्ट्वा दन्तेषुमर्दयेत् ॥ २६ ॥
रक्तस्रावं दन्तपीडां ध्रुवं कीटांश्च नाशयेत् ॥

नागरमोथा, कत्था, अडूसा की छाल, लोध, मिश्री, कुटकी, मजीठ, केशर यह सम भाग लेकर बारीक चूर्ण करले इस चूर्ण को दातन की कूची से अथवा बुरुस से दांतों के मांस को छोड़ कर दांतों पर मलने से दांतों से खून का बहना दांतों की पीड़ा और दांतों में लगे हुए कीड़ों का निश्चय से नाश होता है ॥ २६ ॥

अथ कीलौषधम्।

सर्षपः सैन्धवं लोध्रं वचा चेति जलेनह।
पिष्ट्वा बदन मालिप्य मुखकीलान्वि नाशयेत् ॥ २७ ॥

सफेद सरसों, सेन्धा नमक, लोध, वच इनको जलमें पीस कर मुख में गाढ़ा लेप करे, लेप मैदा की मानिन्द बारीक होना चाहिये लेप इतनी देर तक रहना चाहिये कि ज्यादा सूखने न पाये बाद उसे हाथ से खूब मलकर उतार दो पानी से मुंह धो डालो ऐसे ही कुछ दिन के अभ्यास से जवानी के कील नष्ट होते हैं ॥ २७ ॥

—०—०—

अथ मुखव्यङ्गौषधम्।

स्थौणेयं सर्षपाः श्वेतास्तिलाः कृष्णाश्च जीरकम्।
पयसा लिप्य बदनं मुखव्यंगं विनाशयेत् ॥ २८ ॥

नख, सफेद सरसों, कालेतिल, जीरा इनको जल में पीसकर मुख में लेप करने से मुख की झाईं का नाश होता है ॥ २८ ॥

अथवा—

सैन्धवं रजनी कुष्ठं लोध्रं निम्बूकजै रसैः।
पिष्ट्वा संलिप्यबदनं मुख व्यंग हरं परम् ॥ २९ ॥

सेंधा नमक, हलदी, कूठ, लोध यह कागज़ी नीबू के रस में बारीक पीस कर लेप करने से भी झाईं नष्ट होती है ॥ २९ ॥

अथ नासारोगौषधम्।

दूर्वा दाडिम पुष्पाणि कौसुभं च हरीतकी।
शीताम्बुना समालिप्य नस्यं रक्तस्रुतिं हरेत् ॥ ३० ॥

दूब, अनार के फूल, कुसुम के फूल, हरड शीतल जल में पीस कर नसवार लेने से नकसीर दूर होती है ॥ ३० ॥

तथाच पीनसे ।

मरिचं देवदाली च तिलयुग्मं प्रमाणतः ।
अथवा त्र्यूषण गुडं नस्यं पीनस नाशनम् ॥ ३१ ॥

मरिच, देवदाली (घगर बेल) दो रत्तल परिमाण इनकी नस्वार लेने से पीनस रोग नष्ट होता है ।

अथवा पिप्पली, मरिच, शुंठी और गुण इनका चूर्ण भी पीनसनाशक है ॥ ३१ ॥

अथ नेत्र रोगौषधम् ।

सौवीरं सैन्धवं शंखं त्र्यूषणं च मनःशिला ।
धात्रीफलं शर्करा च सामुद्रंफेन मेवच ॥ ३२ ॥
अजाक्षीरेणांजनंस्यात्सर्व नेत्रामयापहम् ॥ ३३ ॥

सुरमा, सेंधा नमक, शंख की नाभी, पिप्पली, मरिच, सौंठ, मनसिला, आमला, मिश्री समुद्रझाग बकरी के दूध में खरल कर रक्खे बाद बकरी के दूध में ही घिस कर नेत्रों में अञ्जन करने से सम्पूर्ण नेत्र रोग नष्ट होते हैं ॥ ३३ ॥

पोटली ।

कासीसंजीरकंताक्ष्र्यं स्फटिका त्रिफला मिसिः ।
निशा सूक्ष्मच्छदाराजी लोध्र माफूक मेवच ॥ ३४ ॥
सञ्चूर्ण्येषां पोटलीतु नेत्रपीडापनोदिनी ॥

हीराकसीस, जीरा, रसौंत, शुद्ध फिटकरी, हरड़, बहेड़ा, आमला, सौंफ, हल्दी, छोटी जामुन, राई, लोध, अफीम, इनका बारीक चूर्ण कर पोटली तैयार करे, यह पोटली नेत्र पीड़ा को हरती है ॥ ३४ ॥

अथ कर्णरोगौषधम्।

तिलार्क पत्र लशुनरसेन परिपूरयेत।
कर्णस्य शूल शमनं पूयास्त्र विनाशनम्॥ ३५॥

तिल काले, पके हुए आक के पत्तों का रस, लहसन का रस, तिल कूट कर मिलावे इनको इकट्ठा कर गरम कर सुहाता रस से कान भरदे इससे कान का दर्द दूर होता है कान से बहती पीब और खून भी बन्द होता है॥ ३५॥

तथाच—

देवदारु वचा शुंठी शिफा सैंधव मेकतः।
अजामूत्रेण सन्तर्प्य पूरणात्कर्णशूलजित्॥ ३६॥

देवदार, वच, शुंठी, वटजटा, सेंधा नमक बकरीके मूत्र में घोट कर कान में भर देने से कान की पीडा दूर होती है॥ ३६॥

अथ शिरोरोगौषधम्

कुष्ठ कट्फलकैरण्ड देवदारु समन्वितम्।
शिरोर्तिं वातजां हन्ति कांजिकेनवलेपितम्॥ ३७॥

कूठ, कायफल, एरण्ड, देवदार इनको कांजी से पीसकर मस्तक पर लेप करने से वात का शिर दर्द शान्त होता है॥ ३७॥

अथ कफशिरोर्तौ।

एरण्डराश्ना कुष्ठानि वचामांसी च मुस्तकम्।
संवृद्धदारु तप्ताम्बु पिष्टंलेपाच्छिरोर्तिजित्॥ ३८॥

एरण्डमूल, रहसन, कूट, वच, जटामासी, नागरमोथा, विधारा, देवदार इनको गरम जल से पीसकर लेप करने से कफ की शिरो· व्यथा शान्त होती है॥ ३८॥

अथ पित्तशिरोर्तौ।

कसेरुकाभया दूर्वा पद्मजोशीर चन्दनम्।
पित्तोत्थितं शिरःशूलं हन्तिलेपन मात्रतः॥ ३९॥

कसेरू, हाड, दूबघास, कमलबीज, खस, सफेद चन्दन इनका शीतल जल से लेप करने से पित्त की पीड़ा शांत होती है ॥ ३९ ॥

त्रिदोषजशिरोर्त्तौ

कुष्टं कट्फलकैरण्डमूलं मरिच मिश्रितम् ।
तप्तोदकेन सलिप्येत् त्रिदोषोत्थ शिरोर्तिजित् ॥ ४० ॥

कूठ, कायफल, एरण्डमूल, मरिच इनको गरम जल में पीसकर लेप करने से त्रिदोष की शिरपीड़ा शांत होती है ॥ ४० ॥

अथार्द्धशिरोर्त्तौलेपः ।

मधुयष्टी तथा कुष्ठं शारिवा पिप्पली तथा ।
कांजिकेन समापिष्ट्वा लेपादर्द्ध शिरोर्तिनुत् ॥ ४१ ॥

मुलहटी, कूठ, उसघा, पिप्पली इनको × कांजी में पीस लेप करने से आधे शिर का दर्द दूर होता है ॥ ४१ ॥

तथाच–

धत्तूरबीज नस्येन शिरस्तोदो विनश्यति ॥ ४२ ॥

धतूरा के बीजों का चूर्ण कर नसवार लेनेसे भी आधे शिर का दर्द दूर होता है, थोड़ा सा चूर्ण प्रयोग करना चाहिये बाद घी की नसवार ले लेनी उत्तम है ॥ ४२ ॥

अथ केशवर्द्धनौषधम्

गोक्षुरस्तिल पुष्पाणि युतानि मधु सर्पिषा ।
एषां लेप प्रयोगेन केशवर्द्धनकृत्परम् ॥ ४३ ॥

गोखरू, तिलों के फूल, कूटकर शहत और घी में मिलाकर केशों पर लेप करने से कुछ दिन के अभ्यास से केश बढ़कर लम्बे हो जाते हैं और कोमल भी रहते हैं काले भी होते हैं ॥ ४३ ॥

× कुल्माषधान्यमाण्डादिसाधितं काञ्जिकं विदुः । परन्तु वृद्ध वैद्य प्रायः सिरके का उपयोग लेपादि में करते हैं ।

अथेन्द्र लुप्तौषधम्।

दन्ती दन्तस्य भस्मापि रसांजन समन्वितम्।
अजाक्षीरेण संलिप्त मिन्द्रलुप्त निवारणम्॥ ४३॥

हाथी दांत की भस्म, रसौत, सम भाग बकरी के दूध में पीस कर लेपन करने से इन्द्र लुप्त (बाल चरा) नष्ट होकर बाल पैदा होने लगते हैं॥ ४३॥

अथ श्वेत केश रञ्जनम्।

भृङ्गराजो लोह चूर्णं त्रिफला नीलिका दलम्।
अजाक्षीरेण सलिप्तं केशरञ्जन मुत्तमम्॥ ४४॥

भांगरा, लोहे का चूर्ण, हरड, बहेड़ा, आमला, नीली (वसमा) इनका लेप करने से बकरी के दूध में घोट लेना चाहिये, सफेद बाल काले होते हैं॥ ४४॥

इति हरिधारते वातव्याध्या दिशिरोरोगान्त प्रतीकारो नाम पचमाऽध्यायः॥ ५॥

—०—०—

अथ स्त्री रोग प्रतीकारः।

ह्रीबेर चन्दनं चैव त्वक्क्षीरी नागकेशरम्।
तण्डुलोदकसंयुक्त पीत प्रदर नाशनम्॥ ४५॥

नेत्रवाला, चन्दन, तवासीर, नागकेसर इनका चूर्ण चावलों के धोवन से सेवन करने पर प्रदर का नाश करता है॥ ४५॥

तथाच—

सिततण्डुल संमिश्रं पीत्वावै नागकेशरम्।
प्रदरान्मुच्यते योषा पथ्यं शालिमसूरकाः॥ ४६॥

नागकेसर का चूर्ण वा समति के चावलों के धोवन से सेवन करने पर स्त्री प्रदर रोग से मुक्त होती है, इसमें पथ्य भात और मसूर देना चाहिये॥ ४६॥

अथपुष्प करणौषधम् ।

त्र्यूषणं ब्रह्मदण्डी च तिलक्वाथे न संपिवेत् ।

जायते पुष्प वाहुल्यम पुष्पायाः स्त्रियोध्रुवम् ॥ ४७ ॥

पिप्पली, मरिच शुंठी, ब्रह्मदण्डी इनका चूर्ण काले तिलों के क्वाथ से सेवन किया फूल न आने वाली अथवा जिसका फूल आना बन्द होगया हो उसे फूल (मासिक धर्म) अवश्य आने लगेगा ॥ ४७ ॥

तथाच-

तुम्बी बीजं यवक्षारं गुडो मदनकंफलम् ।

दन्ती सीहुण्डदुग्धेन वर्तिका पुष्प कृद्भवेत् ॥ ४८ ॥

कड़वी तोम्बी के बीज, यवक्षार, पुराना गुड, मैनफल, दन्ती इनका चूर्ण बारीक करलो थोहर के दूध से बत्ती तैयार योनि में धरने से फूल आने लगेगा ॥ ४८ ॥

योनिरोगहरावर्तिका ।

जातीफलं विडङ्गञ्च बहुला नागकेसरम् ।

शिरीषाङ्कुराब्धिफेनेन ह्येषां टङ्क मितावटी ॥ ४६ ॥

समस्त भगदोषाणां नाशिनी भग संस्थिता ।

शालिमुग्दं घृतं दुग्धं पथ्यम त्रविधीयताम् ॥ ५० ॥

जायफल, विडङ्ग, इलायचीदाना, नागकेसर, शिरीष के कोमल अङ्कुर, समुद्रझाग इनका सम भाग बारीक चूर्ण करे ४ मासा की बत्ती बनाकर योनि में स्थापन की हुई सम्पूर्ण भग के विकारों का नाश करती है, इसमें पथ्य भात मूंग की दाल घी दूध का प्रयोग करना चाहिये ॥ ५० ॥

नोट—बत्ती, अधोलिखित विधि से तैयार करे ।

गाय का घी लोहे की कडछी में रख कर अग्नि पर गरम करो बाद उसमें पुराना गुड मिला लो जब घी के साथ गुड पिघल कर

मिल जाय तब उसमें उपरोक्त औषधियों का चूर्ण मिलाकर किसी लोहे आदि की सींक से एकजान करलो मिल जाने पर फूल की थाली में धरदो शीतल हो जाने पर बत्ती बनालो।

अथ गर्भधारणौषधम्।

त्र्यूषणं कंटकारी च *नागकेसर मेवच।
गोघृतेन समपीतं गर्भ धारण मुत्तमम् ॥ ५१ ॥

पिप्पली, मरिच, शुंठी, कटेरी, नागकेसर इनका चूर्ण गाय के घी से मासिक धर्म के चतुर्थ दिन से तीन दिन सेवन कराने से गर्भस्थिति होती है ॥ ५१ ॥

तथाच—

नागकेसर मेवैकमृतवन्ते गव्य सर्पिषा।
पीत्वा गर्भमवाप्नोति पथ्यं दुग्धोदनं शुभम् ॥ ५२ ॥

केवल नागकेसर का चूर्ण ही ऋतु स्नान के अनन्तर गायके घी से सेवन करने से गर्भ धारण होता है, तीन दिन सेवन करना चाहिये दूध भात का पथ्य करना ॥ ५२ ॥

अथ सुखप्रसूतिकरौषधम्।

पाठां वङ्गञ्च संपिष्य भगलेपं प्रयोजयेत्।
प्रसूतिर्जायते सद्य उदरेन व्यथा भवेत् ॥ ५३ ॥

पाठा, बङ्गभस्म इनको पीस कर भग में लेप करने से सुख से शीघ्र प्रसव (बच्चा) होता है, और उदरमें पीड़ा भी नहीं होती है ॥५३॥

अथान्यलेपः।

वज्रीदुग्धं समादाय नखान्नाभिश्च लेपयेत्।
प्रसूतिर्जायते वद्धेमूले मुद्योकटीतटे ॥ ५४ ॥

---

*बाजार में जो नागकेसर मिलती है वह असली नागकेसर नहीं है (असली नागकेसर पुन्नाग अर्थात् सुरङ्गी की सूखी कली को कहते हैं) इसी से गुण नहीं होता है।

थोहर के दूध का हाथ, पांव और नाभी में लेप करने से सुख से प्रसूति होती है।

और मुण्डी (गोरखमुण्डी) का मूल कमर में बांधने से भी सुख से प्रसव होता है ॥ ५४ ॥

अथ स्रवद्गर्भस्तम्भनौषधम् ॥

लज्जालुर्धातकी पद्मबीजानि मधुयष्टीका।
तण्डुलोदक संपीतमिदं गर्भ न पातयेत् ॥ ५५ ॥

लज्जावन्ती (छुईमुई) धवैका फूल, ×कमलकाबीज, मुलहठी इनका चूर्ण कर चावलों के पानी से सेवन किया गर्भ को गिरने नहीं देता ॥ ५५ ॥

अथ भगसङ्कोचनम्।

स्फटिका धातकी माई माजू पुष्पं फलं त्वचम्।
स्मरमन्दिर मध्यस्तं संकोचं कुरुते क्षणात् ॥ ५६ ॥

फूलफटकरी, धवई का फूल, मांई, माजूका फूल, फल और छाल इनका चूर्ण कर योनि के बीच में मर्दन करने से शीघ्र ही भग संकुचित होजाती है ॥ ५६ ॥

तथाच--

कस्तूरी तुल्य कर्पूरंवटी क्षौद्रेण संस्कृता।
गाढा करोति योनिस्था योनिमेषान संशयः ॥ ५७ ॥

कस्तूरी, कापूर दोनों सम भाग लेकर शहद से गोली तैयार करे यह गोली योनि में धरी हुई निश्चय से अत्यन्त कठिन कर देती है ॥ ५७ ॥

×कमल बीज के अन्दर हरी जीभ विष होती है इसे निकाल डालना चाहिये।

भग दुर्गन्धि हरौषधम् ।

अरिष्टपत्र क्वाथेन धावनं दुष्ट गन्धहृत् ।

भगस्य गव्य तक्रेण धावनात्कठिनक्रिया ॥ ५८ ॥

नीब के पत्ते के क्काथ से भग धोई जाय तो भग की बदबू नष्ट होती है और गाय के मठा (छाछ) से प्रक्षालन करने पर कठिन होती है ॥ ५६ ॥

अथ कुचकठिनौषधम् ।

वाजीगन्धा देवदारु वचा गजकणा समा ।

शतपुष्पा कर्णकारी नीरेणै तद्वि लेपनात् ॥ ५६ ॥

कुचौ कठिनतां धत्ते पतितावपि योषितः ।

तण्डुलोदकनस्यंवा दत्तं पुष्पदिनेषु च ॥ ६० ॥

असगन्ध, देवदार, वच, गजपीपली, सोंफ, कनेर इनको सम· भाग लेकर जल से बारीक पीस स्तनों पर लेप करने से गिरे हुए भी स्त्री के कुच कठिन हो जाते हैं ।

और ऋतु (हैज) के दिनों में चार दिन तक चावलों के धोवन की नास लेने से भी स्तन कठिन होते हैं ॥ ६० ॥

अथ स्तन पीड़ा हरौषधम् ।

निशां कुमारी सन्ताप्य कुचौयस्तापयेद्भिषक् ।

कुचपीड़ा रोगनाशः सिद्धयोगोऽयमुच्यते ॥ ६१ ॥

हलदी का बारीक चूर्ण कर घीगुवार के गूदे पर खूब बुरका कर आग पर गरम कर स्त्री के स्तनों पर सेक सुहाता २ दे इस सिद्ध योग से स्तन पीड़ा का नाश होता है ॥ ६१ ॥

बाजीकरण पुरुषी करणौषधम् ।

विजयाऽकर्करजटां पिष्ट्वा कनकजैरसैः ।

छायाशुष्कांवटीं कृत्वापुंमूत्रेण विघर्षयेत् ॥ ६२ ॥

लेपनात्कठिनं लिंगं स्थूलं दीर्घञ्च जायते ।

सूताश्च गन्धेभकणासिताभिर्लेपनादपि ॥ ६३ ॥

भांग, अकर्कराका मूल, धतूरा के रस में घोटकर गोली तैयार करे छाया में सुखाले, आदमी के पिशाब में गोली घिस कर आगे का हिस्सा छोड़कर लिङ्ग पर लेप करे इससे लिङ्ग कठिन मोटा तथा लम्बा होता है। और पारा, असगन्ध, गजपीपली, मिश्री का लेप करने से भी उपरोक्त फल होता है ॥ ६३ ॥

अथ स्तम्भनौषधम् ।

अजास्नीहुण्डयोर्दुग्धं लज्जालुश्चाश्व मारकः ।
करांघ्रिनाभिलेपोऽयं वीर्यस्तम्भकरः परः ॥ ६४ ॥

बकरी का दूध, थोहर का दूध, छुईमुई, कनेर इनका हाथ और पावों के तलुओं में तथा नाभी में लेप करने से स्त्री सहवास में वीर्यस्तम्भ (बन्धेज) होता है ॥ ६४ ॥

—०—०—

अथ वाजीकरणौषधम् ।

पिकाक्षबीजं मुसली वानरीबीज नागरम् ।
त्रिकण्टकोऽश्वगंधा च बलाशालमली पुष्पकम् ॥ ६५ ॥
शतावरी मोचरसः श्लेष्मान्तक फलं तथा ।
चूर्णं सिता दुग्धयुतं पीतं वीर्यकरं परम् ॥ ६६ ॥

तालमखाना, सफेदमूसली, कौंचकेबीज, शुण्ठी, गोखरू, असगन्ध, खरेटी, सीमल के फूल, शतावर, मोचरस, लसुडी का फल इनका चूर्ण कर मिश्री से मिले दूध से सेवन किया अत्यन्त वीर्य को बढ़ाता है, अल्पवीर्य, क्षीणवीर्य वालों के लिये हितकर है ॥ ६६ ॥

कामविलास गुटिका ।

जातीफलं कुंकुमञ्च पिकाक्षं हिंगुलं त्वचा ।
लवंगं वानरीबीजं पत्रं तुम्बरु मस्तकी ॥ ६७ ॥

यवान्यकर्करा चेति ह्येषां भाग त्रयं स्मृतम् ।
चतुर्थांशोऽहिफेनस्यवटी टंक मिता कृता ॥ ६८ ॥
भक्षिता शयने स्त्रीणां सहस्रं रमते नरः ।

जायफल, केसर, तालमखाना, सिंगरिफ (यदि रससिंदूर डाला जाय तो अत्युत्तम है) दालचीनी, लौंग, कौंचबीज, तजपत्र, तेजबल, रूमामस्तंगी, अजवाइन, अकरकरा इन सब औषधों को तीन २ भाग और अफीम चतुर्थांश सबका बारीक चूर्ण कर ४ मासा की गोली तैयार करके रात सोते समय दूध से सेवन करे इसके प्रभाव से पुरुष अनेक स्त्रियों से रमन कर सकता है ॥ ६८ ॥

अथ देहदौर्गन्धहरौषधम्

चन्दनं रजनी मुस्तं शठीरुद्र जटा गुरुः ।
कर्पूरं पद्मकं लोध्रं मूर्वा मातङ्ग केसरम् ॥ ६९ ॥
उशीरामल कान्येषां कल्क मर्दन तस्तनोः ।
दुष्टगंधः क्षयं याति पित्त दोषश्च नश्यति ॥ ७० ॥

सफेदचन्दन, हल्दी, नागरमोंथा, कपूर, कचूर, बालछड़, अगर काफूर, पद्म, लोध, मूर्वा, नागकेसर, खस, आमला इनका बारीक कल्क पानी से करके शरीर में मर्दन करने से शरीर की दुर्गन्धि का नाश होता है और पित्त दोष भी नष्ट होता है ॥ ७० ॥

अथ कक्षा दुर्गन्धहरौषधम् ।

मुस्तामलकबिल्वानि साभयानि विलेपयेत् ।
नीरेण कक्षयोर्द्वयोर्दौर्गन्ध्यं हरते क्षणात् ॥ ७१ ॥

नागरमोंथा, आमला, बेलगिरी, हरड़ सम भाग चूर्णकर पानी से इनका दोनों बगलों में लेप करनेसे बगलों की दुर्गन्धि नाश होती है ॥ ७१ ॥

—०—०—

अथ मुखदुर्गन्धहरौषधम् ।

त्रिजातक च स्थौणेयं जातीपत्रंम केसरम् ।
जातीफलं चेति वटी मधुना सहवासिनी ॥ ७२ ॥
लोध्रं शरीष पुष्पाणि ह्युशीरं नागकेसरम् ।
जलेन मर्दयेद्वक्ते दुर्गन्धि हरणं परम् ॥ ७३ ॥

दालचीनी, इलायची, तजपत्र, थुनेर, जावित्री, नागकेसर, जायफल इनकी शहत में गोली बनाकर मुखमें धरने से मुखसे बदबू का आना बन्द होता है ।

अथवा—लोध, शरीषके फूल, उशीर, नागकेसर इनकी जलके साथ गोली बनाकर मुखमें रखने से भी मुखकी दुर्गन्ध का नाश होता है ॥ ७३ ॥ इति ॥

श्रीहरिराय शर्मा विरचिते हरिधारितग्रंथे
स्त्रीरोग प्रतीकार बाजीकरण प्रतीकारोनाम
षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

उपदंशशूकयोःप्रतीकारः ।

स्निग्धस्विन्नस्य तस्या दौध्वज मध्ये शिराव्यधः ॥ ७४ ॥
जलौकापातनं च स्यादूर्ध्वाधः शोधनं तथा ।
पाकोरक्षः प्रयत्नेन शिश्नक्षय करोहिसः ॥ ७५ ॥

उपदंश (गरमी) (आतशक) वाले रोगीको प्रथम स्नेह और स्वेद देकर किसी चतुर डाकृर आदिसे ध्वज (लिंग) के बीचकी नाड़ी से रुधिर निकलवा दे या जोंक लगाकर खून निकलवावे, वमन विरेच से शुद्धि करावे, विशेषकर ये ध्यान रहे कि लिंग पक न जाय पकने से लिंग गिर जाने का भय रहता है ॥ ७५ ॥

उपदंशे कषायः।

पटोल निम्ब त्रिफला गडूची क्वाथं पिबेद्वा खदिरासनस्य।
सगुग्गलं वा त्रिवृतायुतवा सर्वोपदंश प्रहरः प्रयोगः ॥ ७६ ॥

बनपरवल, नीम, हरड, बहेड़ा, आमला, गिलोय इनका क्वाथ शुद्ध गुग्गल अथवा निशोत का चूर्ण मिलाकर पिलाने से अथवा खैर का क्वाथ गुग्गल या निशोत मिलाकर पिलाने से सब प्रकार के उपदंश नष्ट होते हैं ॥ ७६ ॥

व्रणप्रक्षालन विधिः।

त्रिफलायाः कषायेण भृङ्गराज रसेनवा।
व्रणप्रक्षालनं कुर्यादुपदंश प्रशान्तये ॥ ७७ ॥

हरड, बहेड़ा, आमला के क्वाथ से अथवा भांगरा के रस से उपदंश के व्रण (जख्म) साफ होते हैं ॥ ७७ ॥

बाद आगे लिखे अनुसार लेप करना चाहिये।

अथ लेपः।

दहेत कटाहे त्रिफलां समापां मधु संयुताम्।
उपदंशे प्रलेपोऽयंसद्यो रोपयतिव्रणम् ॥ ७८ ॥

हरड, बहेड़ा, आमला, तीनों के बराबर जल और शहद मिला कर कड़ाही में पकावे जब त्रिफला जलकर कोयला की माफिक हो तो बारीक घोट लेप करने से शीघ्र ही व्रण साफ होकर अंकुर आ जाता है ॥ ७८ ॥

उपदंशे धूपः॥

टंकणं हरितालं च हिंगुलं च तृतीयकम्।
टंक द्वयं द्वयं ग्राह्यं पारदं टंक मेककम् ॥ ७९ ॥
एतेषां सप्तगुटिकाः सप्त कालेषु धूपयेत्।
सुवातरक्षां कृत्वैतदुपदंशात्प्रमुच्यते ॥ ८० ॥

सुहागा, हरताल, सिंगरफ दो दो टंक, पारा एक टङ्क इनको बारीक पीसकर ७ गोली करले, ७ दिन एक २ गोली को जखमों पर धूप दे वायु की रक्षा करे हवा न लगने पावे इस प्रयोग से उपदंश का रोगी उपदंश से मुक्त होता है ॥ ८० ॥

अथ शूक रोगाधिकारः ।

अक्रमाच्छेफसोवृद्धिं योऽभिवांक्षतिमूढधीः ।
व्याधयस्तस्य जायन्ते दशचाष्टौ च शूकजाः ॥ ८१ ॥

जो विषय लम्पट बेतरीके लिङ्ग वृद्धि चाहते हैं वह अठारह प्रकार की शूक व्याधि से पीड़ित होते हैं ॥ ८१ ॥

अत्र चिकित्सा ।

हितंच सर्पिषः पानं मध्ये वापि विरेचनम् ।
हितः शोणित मोक्षश्च यच्चापि लघु भोजनम् ।

शूक रोग में प्रथम घी पिलाना, मध्य में विरेचन, अन्तमें रुधिर निकलवाना हितकर है और सब हलका भोजन पथ्य है ॥ ८२ ॥

अथ विरेचनौषधम् ।

शुद्धाग्नगोदुग्ध संपक्वाजय पालाग्मसा हरेत् ।
दशटंकान् टंकमितं पुष्करं मरिचं तथा ॥ ८३ ॥
यवनीं नागरं तुत्थ गैरिकं सम मेवच ।
एषां वटीं सप्त गुंजाभि तांद्विगुण खण्डकाम् ॥ ८४ ॥
भुक्त्वा विरिच्यते मर्त्यः पथ्यं दध्योदन मतम् ।

प्रथम शुद्ध किये पुनः गाय के दूध में पकाये हुए जमालगोटे के १० टंक (४० तोला) लेवे पोहकर मूल, मरिच, अजवायन, सोंठ, शुद्ध तूतिया, गेरू यह सब एक २ टंक लेकर इनको बारीक पीस ७ रत्ती की गोली तैयार करे इसको भक्षण कर पुरुष विरेक को प्राप्त होता है, इसमें पथ्य दधि भात कहा गया है ॥ ८४ ॥

—०—०—

अथ जयपाल शोधनम् ।

नविषं विषमित्या हुर्जैपालं विष मुच्यते ।
शोधितोऽयं विरेकेषु चमत्कारकरः परः ।
पञ्चगव्येषु सशोध्य दूरी कुर्याच्च जिह्विकाम् ॥ ८६ ॥

ततोम्लवर्गे दशधाक्षारवर्गे त्रिधा पुनः ।
कुमारिका द्रवे चैव जले भस्म नियोजयेत् ॥ ८७ ॥

एवं शुद्धस्तु जयपालो भवेद्दाह विवर्जितः ।
तदाविरेचने दद्यादमृतादधिको गुणः ।
मन्दोदरि तवाख्यातं यन्मया शिवतः श्रुतम् ॥ ८८ ॥

जहर को जहर नहीं कहा जाता अशुद्ध जयपाल जहर होता है इस लिये यहां जयपाल शोधन विधि लिखी जाती है—जयपालों का छिलका उतार कर पंचगव्य (गौ का मल, मूत्र, दधि, दूध, घी) में पृथक् २ दोलायन्त्रसे पका कर चाकू से जीभी निकाल अलग करदो पुनः अम्लवर्ग में १० वार, क्षारवर्ग में ३ वार, बाद १ वार घी कुमारी के रस में शोध लो इस प्रकार शुद्ध किया जयपाल दाहादि विकार नहीं करता इसका विरेक में बर्ताव किया अमृत के गुण दिखाता है ॥ ८८ ॥

गोवर्द्धनोधारण वृत्त लीलं गोगोपगोपीक्षितचित्र शीलम् ।
खर्वी कृता खण्डल गर्व मोहं गोमण्डला खंडल मानतोहम् ॥

इति श्रीहरिराय शर्म्म विरचिते हरिधारित ग्रन्थे, उपदंश शूकदोष प्रतीकारोरेच नौषध प्रयोग संयुतः
सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

हरिधारित ग्रन्थः समाप्ति मगात्
शुभमस्तु सर्व जगताम्

अनुभूत ... ...क

ग्रन्थमाला के नियम।

१—हर मास या पुस्तक मिलने पर एक २ पुस्तक प्रकाशित करना।

२—स्थायी ग्राहक वही समझे जावेंगे जो १) प्रवेश फीस भेज ग्राहक श्रेणी में नाम लिखा लेंगे ऐसे ग्राहकों को सब पुस्तकें पौनी कीमत पर दी जावेगीं।

३—अब तक अत्यन्त दुर्लभ—राजयक्ष्मा, श्वास, अर्श ये ग्रन्थ निकल चुके हैं अश्वय आज ही मँगवा देखिये।

४—यह एक रुपया सदा जमा रहेगा नवीन पुस्तक प्रेस से आते ही स्थायी ग्राहकों के पास भेज दी जावेगी पुस्तक पहुंचते ही मूल्य के टिकट भेज देना चाहिये, मूल्य न आने तक आगे की पुस्तक न भेजी जावेगी।

५—जो रोग असाध्य समझे जाते हैं ऐसे २ कठिन रोगों पर एक एक निबन्ध निकाल इस कमी को दूर करना ही इस ग्रन्थमाला का खास उद्देश्य होगा।

६—पुस्तक प्रकाशनमें धन द्वारा सहायता देने वालों का सधन्यवाद फोटो पुस्तक पर छाप दिया जावेगा।

नोट—प्रत्येक आयुर्वेद प्रेमी का कर्त्तव्य है कि वे स्वयं ग्राहक बने व अपने इष्ट मित्रों को भी बनावें।

अनुभूत योगमाला आफिस,

बरालोकपुर, इटावा यू० पी०

—०—०—



क

...रात करना।

...स भेज आ...

...ब पुस्तकें

...ां ये ग्रन्थ

...से आते

पहुंचते ही

आगे को

...ों पर एक

ग्रन्थमाला

६—पुस्तक प्रकाशनमें धन द्वारा सहायता देने वालों का सधन्यवाद फोटो पुस्तक पर छाप दिया जावेगा।

नोट—प्रत्येक आयुर्वेद प्रेमी का कर्त्तव्य है कि वे स्वयं ग्राहक बने व अपने इष्ट मित्रों को भी बनावें।

अनुभूत योगमाला आफिस,

बरालोकपुर, इटावा यू० पी०

—०—०—

यदि आप वैद्य हैं तो—

अनुभूत योगमाला नामक ग्रन्थमाला के ग्रन्थों को अ[...]
मँगवाकर देखिये, ये ग्रन्थ जिन २ रोगों पर लिखे गये हैं उन
रोगों को आप शर्त से बाजी मारकर डङ्के की चोट से भगा स[...]
हैं। इनके लेखकों को स्वर्णपदक दिया जाना निश्चय कर लि[...]
गया है जल्दी मँगवालो।

१ राजयक्ष्मा—राजयक्ष्मा कैसा बुरा रोग है परन्तु इस ग्र[...]
के देखने से आप उसे शीघ्र भगा सकेंगे और रोगी को [...]
सकेंगे। मूल्य ।) आना।

२ श्वास—यह श्वास रोग कैसा बुरा रोग है मनुष्य [...]
कैसी बुरी दशा बनी कर देता है इस दुष्ट को मार भग[...]
यह ग्रन्थ बनाया गया है देखिये। मूल्य सिर्फ ।) आ[...]

३ अर्श—(बवासीर)—बवासीर के समान [...]
दायी कोई रोग नहीं है कैसा ही बवासीर क्यों [...]
लिखित दवाइयों के व्यवहार से समूल [...]
विद्वानों के योग हैं योग ऐसे भी हैं जा[...]
कर देते हैं ११ विद्वानों के अनुभव के [...]
के कल्याण के लिये प्रकाशित हुई [...]

४ हरिधारितग्रन्थ रत्नम्—[...]
पता यह है कि हर जगह इस [...]
गांव में मिल सकती हैं ये [...]
है, भाषा टीका सहित [...]

उपरोक्त चारों पुस्[...]
देंगे डाक व्यय अलग [...]

पता—